श्री दुर्गा सप्तशती पूजा पद्धति

[सादिकूटात्मक त्रिशक्ति चंडिका चर्य्या]

वाशिष्ठ साहित्य सदन का छठा पुष्प

संकलन कर्त्ता

ज्यो० बाबूराम 'वशिष्ठ' हिन्दी साहित्याचार्य

साहित्य भूषण, भागवती, डीग

प्राप्ति स्थान—

लाला रघुनाथ प्रसाद पोद्दार, पुरानी डीग

भरतपुर, राजस्थान

लाल हाथी मन्दिर

नाहरगढ़ रोड, जयपुर, (राज०)

ऐं गुरवे नमः

श्री दुर्गा सप्तशती पूजा पद्धति

[सादिकूटात्मक त्रिशक्ति चंडिका चर्य्या]

वाशिष्ठ साहित्य सदन का छटा पुष्प

सप्तशती का तृतीय अंग

संकलन कर्त्ता

ज्यो· बाबूराम 'वशिष्ठ' हिन्दी साहित्याचार्य

साहित्य भूषण, भागवती, डीग

नित्य कर्म विधिवत करै, दृढ़ श्रद्धा विश्वास।
कृपा पात्र होय इष्ट के, पावहि शुभ अभिलास ॥

प्राप्ति स्थान

लाला रघुनाथ प्रसाद पोद्दार पुरानी डीग

भरतपुर राजस्थान

प्रथम वार १००० | मकर संक्रान्ति २०३६ वि० | मूल्य— प्रति नवदुर्गा आवरण पूजा करना व पाठ करना

समर्पण
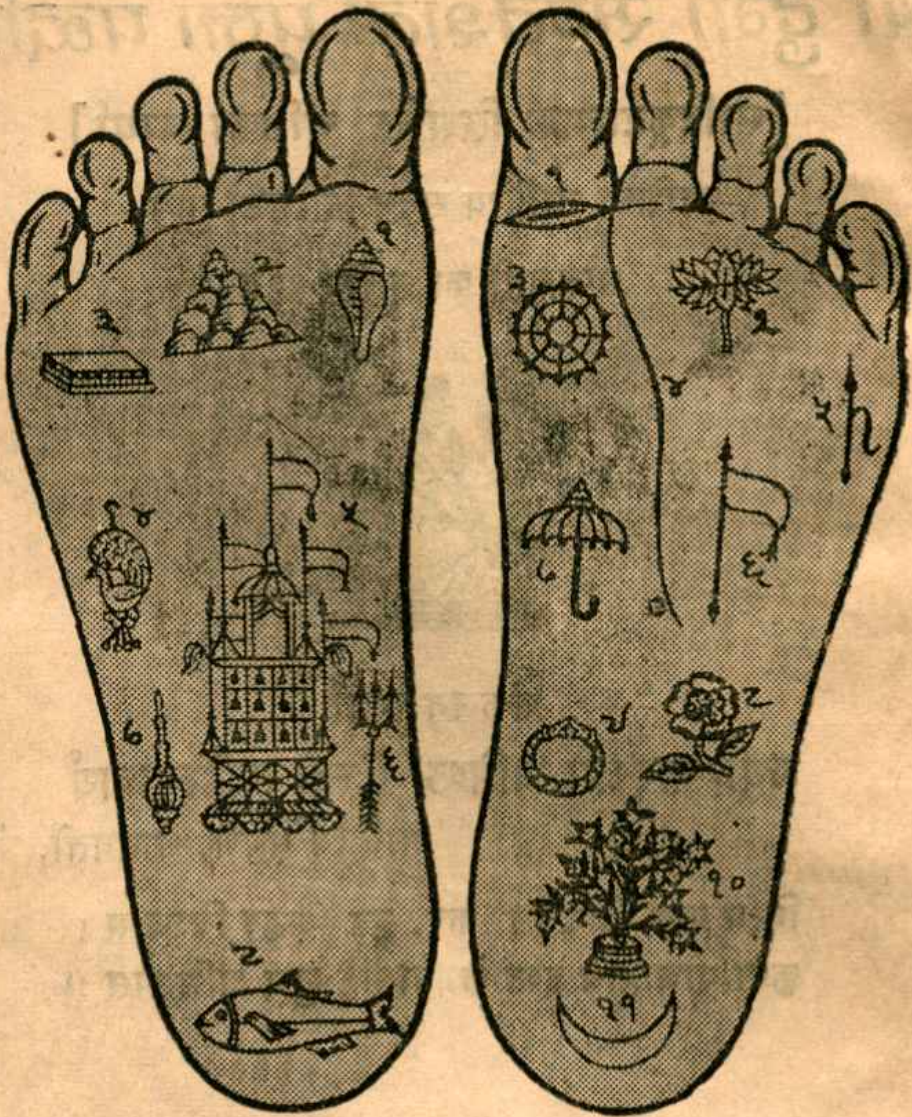
निगमानुसन्धान प्रकाशन पीठाध्यक्ष-अनन्त श्रीविभूषित परम हंस परिव्राजकाचार्य श्री १००८ श्री स्वामी विद्यारण्य जी आश्रम महाराज के श्रीचरणों में

चरण रेणु
वावूराम 'वशिष्ठ'
रघुनाथ 'पोद्दार'

अये

पाठकवृन्दाः । महा हर्षस्य विषयोऽयं परम—पूज्यनीयै आचार्य वर्यै दुर्गा सप्तशतेः प्रमुख आवर्णार्चनम् साधकानां समक्षं संस्थापितम् । यथा हि सप्तशती क्रियात्मकस्य पंचांगानि प्रमुखानि मन्यते । तथा सप्तशतेश्चरित्रत्रयस्य महत्ता प्रतिपादनम् । अद्य तमेव सर्वं अस्माकं समक्षं पर सहस्त्र वर्षं पश्चात् प्रकाशितं कारयन्ति । अहं जाने यै स्वजीवने सदैव समाजं सनातन धर्मं प्रति अग्रसरं करणार्थम् भक्ति, ज्ञान, वैराग्याणां उपदेशं प्रदत्तम् । तथा च मानव जीवन कल्याणे एवं स्व सम्पूर्ण जीवनं व्यतीतं तान वयं कथं साधारण पुरुषं जानीमः तान् तु वयं महापुरुषं प्रति पादयामः । अद्य येषां षष्टं पुष्पं अस्माकम् समक्षं वर्तते । सर्वान पाठकान् अहं निवेदयामि यत् जगन्मातु श्री दुर्गायाः वास्तविकं पूजनार्चनं कृत्वा स्वकीयं लक्ष्यं प्राप्नुयुः ।।

प्रार्थनीय

भक्तिरसविशिष्ट बालप्रवक्ता

भागवताचार्य

सुभाष चन्द्र शर्मा

साहित्य शास्त्री, B. Ed

प्राक्कथन

अनन्त श्री विभूषित भगवान व्यास जी ने विश्व के मानव जीवन को समस्त श्रेयस्कर भौतिक पदार्थों के आनन्द को साधक प्राप्त करता हुआ सम रसात्मक पर शिव की सहज प्राप्ति को श्री मार्कण्डेय पुराण एवं उत्तर मार्कण्डेय पुराण के माध्यम से सर्वाधिष्ठान, सर्वात्मिक, सर्वाराध्या, सर्वशक्ति स्वरूपा, महामाया की उपासना को वर्णन किया है। इसे दुर्गा सप्तशती कहते हैं। इसमें सात सौ श्लोक माने गये हैं। इन सात सौ श्लोकों में गुप्त रूप से सहस्राक्षरा मन्त्र गर्भित किया है। इसके केवल नौ पाठ करने मात्र से ही साधकों के अभीष्ट सिद्ध हो जाते हैं। इसका वर्ष की सन्ध्या स्वरूपिणी चार नव रात्रियों में पाठ किया जाता है। यह दुर्गा सप्तशती सर्वाम्नायात्मिका है। गाणपत्य शैव सौर शाक्त वैष्णवादि सभी साधक सशक्ति बनने के लिए इसे कर सकते हैं और करते भी हैं। लक्षणा में इसके अर्थ को समझने पर वेदान्तियों का ब्रह्म, योगियों का परमात्मा, एवं आगम का पर शिव, ही परोम्बा के नाम से साम रस्यात्मक सिद्ध होता है।

प्राण स्पन्दन द्वारा शब्द ब्रह्म ने पर शिव को ही त्रिशक्ति चामुण्डा महाशक्ति कहकर सप्तशती में उसका माँ के रूप में प्रतिपादन किया है। शिव शक्ति का समरस्यात्मक स्वरूप ही वस्तुतः उपास्य एवं अभीष्ट प्रद होता है। निगम के ज्ञान काण्ड द्वारा जो प्रतिपादित ब्रह्म है, उसे आगम ने कर्मकाण्ड द्वारा प्रत्यक्ष करने की चेष्टा की है। निगम और आगम दोनों के

अभिप्राय ज्ञान काण्ड और कर्म काण्ड को साथ-२ सक्रिय करने को ही उपासना काण्ड कहा जाता है। इसमें शिव शक्त्यात्मक पर शिव एक से अनेक बनकर आत्म विलास करता हुआ सृष्टि स्थिति संहार निग्रह अनुग्रह आदि में आनन्द लेता हुआ पुनः एकत्व में ही प्रतिष्ठित रहता है। इसके साक्षात्कार को सप्तशती की क्रियात्मक विधि विधान ही साधक को संशय रहित बनाने में सक्षम है। और भुक्ति मुक्ति प्रद है। ये सप्तशती ही आगम निगम का रस है। रस ही उपास्य है, रस ही सत, चित, आनन्द का उद्‌गम है। और वही सर्वस्त्र है। 'रसो वै सा' इति श्रुति।

श्री दुर्गा सप्तशती में प्रथम चरित्र, मध्यम चरित्र, और उत्तम चरित्र तीन ही प्रधान चरित्र हैं। प्रथम चरित्र में महा काली नायिका है। ये ईशान आम्नायात्मिका है, पूर्वाम्नायिकी सिद्ध लक्ष्मी एवं रक्त दन्तिका और उत्तर की पंच वक्त्रा महाकाली दोनों मिलकर दश वक्त्रा महाकाली बने हैं। दशों दिशाओं को संरक्षण के कारण इसके दस पाद हैं। हाथों में दस आयुध रक्षा के प्रतीक हैं। किस आयुध चरण और मुख के ध्यान से क्या क्या सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। यह गुरुगम्य विषय है। साधक को प्रथम अन्तर्याग द्वारा इस काली शक्ति जिसका रुद्र भैरव है अधोमुख स्वाधिष्ठान चक्र में ध्यान करना चाहिए यह पूर्व आम्नायात्मिका स्वाधिष्ठान एवं उत्तर आम्नायात्मक विशुद्ध से मिलकर बना है, आधा विशुद्ध और आधा स्वाधिष्ठान दोनों ने अपने मिश्रित रंग द्वारा इसे एकादश पत्रात्मक बनाया है। इसे हम अधोमुख स्वाधिष्ठान कह सकते हैं। पत्रों का ध्यान कर चैतन्य कर उस पर काली का ध्यान कर प्राण प्रतिष्ठा करके मानसिक पूजन करें। फिर नासा

द्वारा प्राण पर बिठाकर मनोमयी मूर्त्ति को बाहर काली यन्त्र पर प्रतिष्ठा करे। काली का आवरण पूजा करने से काली की अनन्त शक्तियों का साधक को यथार्थ प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। इस पूजा से मन्त्रात्मक रहस्य का बोध भी होता है। काली के भयंकर रूप के ध्यान से काम क्रोध आदि षड़रिपुओं पर साधक सहज ही विजय प्राप्त कर लेता है विशुद्ध ज्ञान योग का वोधक है। और स्वाधिष्ठान मन्त्र योग का वोधक है।

मध्यम चरित्र :—

इस चरित्रकी महालक्ष्मी नायिका है। ये आग्नेय आम्नायात्मिका है। ये दक्षिण और पूर्व मिल कर बनती है। दक्षिण की बुगलामुखी और पूर्व की कमला महालक्ष्मी दोनों मिलकर अष्टदश भुजी महालक्ष्मी बनती है। इसका ध्यान मणिपुर और स्वाधिष्ठान मिलकर बनता है। ये आठ दल का अधोमुख चक्र है। अधोमुख मणिपुर इसे कहते हैं। इसका रंग दोनों चक्रात्मक है। ध्यान में छत्र के सदृश्य ही देखना चाहिए। महालक्ष्मी का ध्यान कर प्राण प्रतिष्ठा कर मानसिक पूजा करें। पुनः फिर पूर्ववत वाह्य आवरण पूजा करने से साधक को इष्ट भक्ति कैसे की जाती है। भक्ति के परा, अपरा रूपों का साक्षात्कार एवं मातृका साक्षात्कार पूर्वक मन्त्र सिद्धि के रहस्यों का प्रत्यक्षीकरण होता है। इस पूजा से संकलिपत एवं श्रेयष्करी वस्तुएं स्वाभाविक प्राप्त हो जाती हैं और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। महालक्ष्मी का विष्णु भैरव है। (पति है)

उत्तम चरित्र :—

उत्तम चरित्र की महासरस्वती नायिका है। ब्रह्मा भैरव है। ये नैऋत आम्नायात्मिका है। दक्षिण की तारा और

पश्चिम की मोहनी मातङ्गी और सरस्वती ये दोनों मिलकर बनी है। इस आम्नाय की समष्टी वायव्य आम्नाय में होती है। इसलिए ये चरित्र वायव्य एवं नैऋत आम्नाय से युक्त है। एक वायव्य दूसरा नैऋत दोनों का ब्रह्मा ही भैरव है इस प्रकार ३ चरित्रों के चार नवार्ण मन्त्र कौण क्रम से बने हैं। उत्तम चरित्र के दो नवार्ण हैं यह चरित्र वायव्य नैऋत आ-म्नाय से युक्त हैं। साधक अन्तर याग कर वाह्य यज्ञ में यन्त्र पर प्राण प्रतिष्ठा कर आवरण पूजा करने से साधक को ज्ञान एवं विज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। इस प्रकार तीनों चरित्रों से क्रमशः प्रथम कामादि पर विजय द्वितीय भोग और ऐश्वर्य की प्राप्ति एवं तृतीय ज्ञान विज्ञान सहित परा भक्ति द्वारा पराम्बा व पर शिव का सामरस्यात्मक निर्विकल्प समाधि-सुख का रस प्राप्त कर साधक सिद्ध बनता हुआ दिव्य भाव में प्राप्त हो जाता है जो मनुष्य जन्म का परम लाभ एवं पुरुषार्थ है। वह कृत् कृत्य हो जाता है और विश्व को कृत् कृत्य करने की क्षमता प्रदान कर लेता है। तीनों की समष्टि चित्शक्ति चामुण्डा है—जिसका ध्यान विशुद्ध और आज्ञा चक्र के बीच ६४ पत्रात्मक–ललना चक्र में किया जाता है—जिसका भीषण भैरव है। वेदान्त केवल विचार मात्र से ही ब्रह्म निरूपण करता है। उसका साक्षात्कार एवं प्रत्यक्षीकरण उसका ऐश्वर्य उसकी समर्थ उसकी शक्तियों का साक्षात्कार इस शक्ति उपासनात्मक दुर्गा सप्तशती के क्रियात्मक रूप से ही सम्भव है, पूर्व, उत्तर, पश्चिम, दक्षिण अधः ऊर्ध्व आम्नाययोग से बनी हुई सादि कूटा-त्मिका सप्तशती पश्चिम आम्नायात्मिका मानी जाती है। जो ऐहिक पारलौकिक, सुख को प्रदान करने में समर्थ होती है! अनन्त श्रीविभूषित भगवान आद्य शंकराचार्यजी ने सादि कूटात्मक सप्तशती का क्रियात्मक रूप यति दण्ड ऐश्वर्य विधान नामक

पुस्तक में वर्णन किया है। आगम ग्रन्थों में इसका स्पष्ट वर्णन प्राप्त होता है। पुरुष चर्यार्णव में भी वर्णन किया है। अन्य आगम ग्रन्थों में आम्नायात्मिका चामुण्डा का विशद् वर्णन प्राप्त होता है।

सप्तशती के क्रियात्मक ५ अंग हैं। १ प्रातः कृत्य अन्तर याग भू शुद्धि, भूत शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठा, अन्तर मातृकादि न्यास एवं वैदिक गणपत्यादि पूजन

द्वितीय पात्र शुद्धि, द्रव्य शुद्धि, पात्र स्थापन, घट स्थापन तृतोय महाकाली शुद्ध सत्त्व स्वरूपा का रुद्र भैरव के साथ अन्तर वहिर्याग में आवरण पूजा महालक्ष्मी सत, रज, तम, स्वरूपा विष्णु भैरव के साथ आवरण पूजा महा सरस्वती, सत्व, रज, तम का व्यवर्तवाद, परिणाम वादात्मक, सविकल्प निर्विकल्प समाधि का साक्षात्कार ब्रह्म भैरव के साथ आवरण पूजा तीनों की शक्ति त्रिशक्ति चामुण्डा का ललना चक्र में ध्यानादि एवं वहिर्याग में आवरण पूजा, भीषण भैरव के साथ करने से निर्विकल्प समाधि सुख व पूर्ण नैर्माल्य प्राप्त करना। समष्टि त्रिशक्ति के महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती तीनों मुख एक हो गये हैं। २४ भुजा हैं साथ में भीषण भैरव है। खड्ग, चक्र, गदा, वाण, शूल, फरसा, वज्र, पद्म, दण्ड, मूषल, अभय, और पाश दाएँ हाथ में है। वाएँ हाथ में, शङ्ख, धनुष, परिध भुषण्डी, कमण्डल, अक्षमाला, कुण्डिका, शक्ति, धाल, हल, घण्टा और मधुपात्र हैं। इस प्रकार ध्यान करने से इच्छा, ज्ञान, क्रिया, सत, रज, तम, स्थूल, सूक्ष्म, कारण, सत चित, आनन्द, कर्म, उपासना, ज्ञान, पर विजय प्राप्त कर निर्विकल्प समाधि सुख का रस एवं पूर्ण हन्ता विमर्ष की सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है। साधक दिव्य कोटि में पहुँच कर

परम मौन में प्रतिष्ठित होकर स्वस्थ हो जाता है। यह तृतीय चरण है। चतुर्थ में सप्तशती नाम्नात्मक बीज मन्त्र, सहित पूजा एवं पाठ कवच सहस्रनाम, चण्डिका स्तोत्रादि का पाठ इसके बाद सप्तशती का पाठ करना चाहिए, पंचम में हवन जो तीनों आवरणों में आए हुए नामात्मक आवरण देवताओं का कर्तव्य है। शिवशक्तयात्मक चारों नवार्णों का हवन आद्य में विघ्न शान्ति के लिये गणपति वटुका का भी हवन अत्यन्त आवश्यकीय है तर्पण, मार्जन, बलिदान; कन्या वटुकों का पूजन, भोजन, सपत्नीक ब्राह्मण भोजन, क्षमा याचना, कर्मफल प्राप्ति व समर्पण, कर्मपूर्णता, विसर्जन महोत्सव, ये पांच अंग सप्तशती के हैं। जो साधक पांचों अंगों से श्रद्धा, भक्ति प्रेम, विश्वास पूर्वक चारों नव दुर्गाओं में अन्तर्याग बहिर्याग कर सप्तशती का पाठ करता है। और तीन वर्ष तक नव दुर्गाओं में लगातार विधिवत् पाठ करता है। उसको पराम्बा स्वीकार कर लेती है अर्थात् अपना भक्त मान लेती है। वह निश्चय ही धर्मादि चतुष्टय एवं अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करता है। जो केवल पाठ मात्र करता है वह अपनी श्रद्धा भक्ति के अनुसार उतने ही अंशों में फल प्राप्ति का अधिकारी है। यथार्थ में पांचों अंगों के सहित ही करने से सर्वांश नव दुर्गा का फलाधिकारी है। भगवती की कृपा होने पर साधक भगवती के विषय को जानता है। विषय जानकर जो प्रमादवश नहीं करता है, वह भगवती का अपराधी एवं आत्मवंचक है। उसे अनिष्ट भी होने की संभावना रहती है। जो निष्काम भाव से विधिपूर्वक नव दुर्गा पाठ करता है उसकी सेवा में माधुर्याधिष्टात्री, शक्तियां एवं ऐश्वर्याधिष्टात्री शक्तियां सेविका बनकर सदैव भक्ति-मुक्ति प्रदान कर देती हैं। वह सत्य संकल्पी बन महापुरुष

वन जीवन मुक्ति प्राप्त कर लेता है। दिव्य भाव में स्वस्थ हो जीवनमुक्त सहजावस्था में प्रतिष्ठित हो जाता है। वह देशिक वर उपाधि से युक्त हो जाता है। अनन्त श्रीविभूषित परमहंस परिव्राजकाचार्य १००८ श्रीविद्यारण्यजी आश्रम महाराज जी की कृपा से यह विशेष पीठ पूजा, आवरण पूजा, पृथक पृथक नवार्ण इस लघु पुस्तिका में सहस्रों वर्ष बाद इस भारत में प्रकाशित किये जा रहे हैं। जिनके लिये हम चिर कृतज्ञ हैं।

"पूजाया लभते पूजः, जयात् सिद्धि न संशय।"
"ददामि बुद्धि योगन्तम्, ये न मा मुपयान्तिते॥" गीता

मानव जीवन प्राप्ति के यथार्थ लाभ को प्राप्त करने का यह सप्तशती विधान भगवान व्यास ने वर्णन किया है। सप्तशती को एक मात्र पृथक दीक्षा होती है। वह सप्तशती को ही सर्वस्व समझते हैं। क्रमशः काली, लक्ष्मी, सरस्वती की उपासना उनके गणपति, भैरव, वटुक, योगिनी आदि के साथ करते हैं और अभीष्ट प्राप्त करते हैं। साक्षात् पराम्बा स्वरूप गुरुजनों सन्तों, उत्तर साधकों की कृपा से, भगवती योग्यतानुसार, अपनी पूजा पाठादिक की ज्ञान प्राप्ति कराती है। इसे उसकी महाकृपा कहते हैं। विधिवत क्रिया ही कृपा की जननी है, भारत में कोटि कोटि पाठ यज्ञ, लक्ष चण्डि आदि प्रति नव दुर्गाओं में स्थान स्थानों पर होते हैं। साधक अन्तरयाग आदि उपरोक्त विषयों को न जानकर व जानकर प्रमादवश नहीं करते हैं। यज्ञाचार्य स्वयं भी जानते हुए न कर प्रमाद को ग्रहण करते हैं। ये यज्ञ विधिहीन होने से देश में अशान्ति अविश्वास, घृणा, धर्म को ढकोसला, असुचि, दैन्य, भय, युद्ध,

स्वार्थ, अज्ञान, अकाल, ईर्ष्या, मान आदि आसुरी वृत्ति का कारण ही बनते हैं। जबकि दैविक कर्म से दैव गुण मानव में साधक में देश में और विश्व में बढ़ने चाहिये, ये सप्तशती भगवान व्यास के समाधि भाषा में वर्णित पराम्बा का वाङ्मय साक्षात् विग्रह है। यह सिद्ध विद्या है। भारत की महान निधि है। साधकों का सर्वस्व है। सिद्धों का कंठावरण है। मातृ का मण्डल की पूर्ण प्रभा है। मानव की पराकाष्ठा है। हम भगवान व्यास के इस महा उपकार के चिर ऋणी हैं। सप्तशती विश्व का कल्याण करें, और हम विधिपूर्वक इस मार्ग में आगे बढ़ें। ऐसी पराम्बा से प्रार्थना है। अग्रिम प्रकाशन में मंत्रात्मक सप्तशती एवं सात सौ मूल श्लोकों की सप्तशती का प्रकाशन भगवती करावें ये हमारी कामना है।

इसमें श्रीसुभाष चन्द्रजी शास्त्रीजी ने मूल प्रति लिखने की कृपा की है इनके हम आभारी हैं। प्रकाशन व्यय श्रीरघुनाथ प्रसाद जी पोद्दार (खण्डेलवाल) पुरानी डीग द्वारा किया है वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

गुरुपूर्णिमा २०३६

चरण रेणु (संकलन कर्त्ता)
बाबूराम 'वशिष्ठ' डीग
भरतपुर-राज०

सम्मति

स्वात्मा एवं परमात्मा को शक्ति घन कहा है। अर्थात् अनन्त शक्तियों का वह ही एक मात्र आधार है व वह ही स्वयं सर्वशक्ति है। व उससे ही सर्व शक्तियों का उद्गम, स्थिति और उसमें ही उनका लय होता है। इस प्रकार सृष्टि स्थिति संहारकारी तीन ही प्रधान शक्ति हुई, जो अन्तस्थ वाह्यस्थ अनन्त शक्तियों की उत्पत्ति, स्थिति संहार त्रय कृत्य करती हुई व्रह्माण्डों की उत्पत्ति स्थिति और संहार प्रतिक्षण कर रही हैं, कर रही थीं करेंगी, बस उन्हीं को आगम ग्रंथों में महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती की संज्ञा दी है। त्रिशक्ति समष्टि चामुण्डा उस सर्वाधार परमात्मा व महाशक्ति व परशिव का ही नाम है।

आगम ग्रन्थों में इस त्रिशक्ति का विकाश आठ प्रधान शक्तियों में किया है।

व्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही च तथेन्द्राणि चामुण्डा सप्तमातरः॥

व्राह्मी उत्पत्ति कर्त्ता शक्ति १, माहेश्वरी लय कर्त्ता शक्ति २, कौमारी कर्तृत्व प्रधान शक्ति ३, वैष्णवी पालनकारी शक्ति ४, वाराही कल्प परिमित काल संचालिका शक्ति ५, नारसिंही ज्ञान प्रदात्रि शक्ति ६, इन्द्राणि इन्द्रिय चैतन्य कारिका शक्ति ७, चामुण्डा सर्व तन्त्र स्वतन्त्रा स्व प्रकाश शक्ति।

प्रकृति का नाम चण्ड एवं निवृत्ति का नाम मुंड है ये सोदर भाई हैं इनका विनाश करने वाली शक्ति को चमुंडा कहते हैं। चंड मुंड शब्द के अनन्तर हननार्थ बोधक 'आ' धातु से चंडमुंडा शब्द बनता है और 'पृष्ठोदरादित्वात्' से चामुंडा बन जाता है। चामुंडा किसी अवलम्ब को लेकर प्रकाशित नहीं होती वह स्वप्रकाश, समर्था चरमा और सर्वाराध्या है। उसकी कृपा से ही स्वक्तस्थिति योगी, भक्त, प्रेमी वेदान्ती आदि को सर्वथा सम्भव है। इसीलिये वह सबकी उपास्या है।

विराट और स्वराट में अनन्त शक्तियाँ सुप्तावस्था में पड़ी हैं। जिन्हें हम शरीरस्थ पंचभूतोत्पन्न बहत्तर हजार नाड़ियों की संज्ञा देते हैं। जो अपनी अपनी पृथक पृथक शक्तियों की उद्गम कारिका हैं उन्हें जाग्रत कर पोषण कर क्रियावती कर समर्था कर उनसे अभीष्ट प्राप्त करने को ही आगम निगम में कर्मकाँड का विधान है, शास्त्रोक्त मानसिक वाचिक, कायिक तीनों प्रकार से एक साथ किया हुआ कर्म ही उपासना बनता है और वही ही साधक को सिद्धावस्था से दिव्यावस्था कारक कोटि तक पहुँचाने की क्षमता रखता है। मनमानी पूजा-पाठादि से यथार्थ लाभ सर्वथा असम्भव है। आगम ग्रन्थों में आवरण पूजा को देव सर्वांगी पूजा कहते हैं।

सभी देवों की आवरण पूजा होती है और वह अत्यन्त आवश्यकीय है। देवता और उसके सभी पारिवारिक शक्तियों के साथ आयुधों के साथ साधक के सामने विराजमान हैं फिर साधक उनसे अपने अभीष्ट की प्राप्ति की याचना करता

है वह उसे क्यों नहीं प्राप्त होगी अर्थात् अवश्य ही प्राप्त होती है। इन त्रिशक्ति चामुण्डाओं की पृथक पृथक आवरण पूजा पथक पृथक योगिनी पृथक मातृका पृथक पृथक नवार्ण उनके भैरव उनके मन्त्र उनके गणपति का विषय जीवन में पृथक ही देखा है यद्यपि समष्टि चामुण्डा का आवरण पूजा पहले देखा है। शिव शक्त्यात्मक मंत्रों को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई बिना शिव शक्त्यात्मक मंत्र के जप से कोई अभीष्ट पूर्ण नहीं हो सकता है यह तर्क संगत विषय है साधकों को यह परम उपलब्धि है। नवीन साधकों का यह परम सौभाग्य है। जो साधक अन्तरयाग चक्रों में कर मानसिक व वैखरी वाचिक याग व श्रेष्ठ द्रव्यों से श्रद्धा भक्ति विश्वास से वाह्य याग करेंगे उनकी स्वाभाविकी श्रद्धा प्रेम विश्वास वढ़ कर शुद्ध होंगे और वो विधिवत राजमार्ग पर चल भगवती के कृपा पात्र बनकर मुक्ति के अधिकारी होंगे ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

इस परम पुनीत कार्य के प्रेरक पोषक प्रकाशक निश्चय ही धन्यवाद के पात्र हैं निगमागम' अनुसन्धान प्रकाशन पीठ द्वारा ऐसे श्रेयस्कर प्रकाशन देखकर उन पर चल कर सभी साधक कल्याण प्राप्त करें ऐसी मेरी अभिलाषा है। ये सृष्टि क्रम की आवरण पूजा है जो सदैव सब जनों को करनी चाहिये। आपका अपना ही —

गोविन्द मिश्र
राज्य पंडित, भरतपुर

निवेदन

जैसे एक घड़ी में बहुत पुर्जे होते हैं सबका पृथक पृथक कार्य होता है सबके एक होकर कार्य करने पर ही घड़ी ठीक समय देकर अपने नाम को सार्थक करती है। इसी प्रकार मानव शरीर में कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय अन्त:करण चतुष्टय विविध चक्र नाड़ी संस्थान आदि हैं जो [सभी जाग्रत सुशिक्षित संयत होकर शरीरको स्वस्थ गुणवान तेजस्वी तपस्वी आदि बनाने में सक्षम होते हैं। इसी प्रकार जब हम ब्रह्म को साकार देखना चाहते हैं उनकी शक्तिओं को जाग्रत कर उनमें अभीष्ट प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपनी कल्पना शक्ति को भाव सम्बल से श्रद्धा विश्वास के शुभायुध से विधिवत कर्म की कुशलता से मंत्र बल से चैतन्य करना पड़ेगा तभी ही अभीष्ट प्राप्त कर सकते हैं। देवता का आवरण उसके अंग प्रत्यंग हैं उनकी पूजा ने उनको चैतन्य क्रिया है प्रत्येक देवता की आवरण पूजा होती है जो सृष्टि, स्थिति, लय और अनाख्या भाषा क्रम से की जाती है जिसे गुरुजनों व उत्तर साधकों द्वारा जानने की सदैव चेष्टा करनी चाहिये। इष्ट देवता की अत्यन्त कृपा से ही यह सब वस्तुयें प्राप्त होती हैं। महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वती को सभी चाहते हैं चाहे वो ज्ञानी हो विज्ञानी

हो योगी हो भक्त हो वेदान्ती हो। विधिवत किया हुआ कार्य ही सफलता दाता है। यह सब विचार कर के आवरण पूजा का प्रकाशन हो रहा है। इसके अनुसार नवरात्रि में पूजा करने वाले धन्य होंगे, भगवती के कृपा भाजन बनेंगे और उनकी कृपा से मुझे भी सद् बुद्धि प्राप्त हो ऐसी मेरी कामना है। इस पूजा को एक बार करके अभीष्ट प्राप्त करें, ऐसा मेरा निवेदन है।

निवेदक—
रघुनाथ प्रसाद 'पोद्दार'

अथ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, त्रिशक्ति चामुण्डा-पूजा

ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॐ क्लीं शिव तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयमि नमः स्वाहा

ततः मूल मंत्रेण प्राणायामं कुर्यात् ततः श्रीगणेशगुर्वादीन्नत्वा संकल्पं कुर्यात्

देशकालौ संकीर्त्य मम सर्व पाप क्षय पूर्वक धर्मार्थ काम मोक्षार्थं (भगवति त्रिशक्ति चामुण्डा प्रीत्यर्थं) वो अमुक कामना सिद्धर्थं यथा सम्पादित सामग्रया शारदीय (वासन्तिक वा लघु नव दुर्गा) नवरात्रि मध्ये महाकाली चामुण्डा महालक्ष्मी चामुण्डा, महासरस्वती चामुण्डा त्रिमूर्त्ती समष्टि-चामुण्डा प्रधान पूजा पूर्वक आवरणार्चन महं करिष्ये—

तदंगत्वेन गणपत्यादि, पूजा कलश स्थापन पात्र स्थापनादि महं करिष्ये ।

★

अथ महाकाली यन्त्रस्य पीठ पूजा

अक्षत लेकर पीठ पर डालें ।

ॐ मण्डूकाय नमः। कालाग्नि रुद्राय नमः। मूल प्रकृत्यै नमः। आधार शक्त्यै नमः। अनन्ताय नमः वाराहाय नमः। पृथिव्यै नमः। सुधार्णवाय नमः नव रत्न दोपाय नमः, सुवर्ण पर्वताय नमः। वन्दनोद्यानाय नमः। कल्पतरु वाटिकाय नमः। कारण तोय-परिखाताय नमः। सुवर्ण प्राकाराय नमः। चिन्तामणि मण्डपाय नमः। मणि वेद्रिकायै नमः। तदुपरि श्वेत-च्छत्राय नमः। छत्राधो रत्नसिंहासनाय नमः (आग्नेयादि चतुष्कोणेसु) धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्य्याय नमः। अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्य्याय नमः। पुनः मध्ये अनन्ताय नमः। पद्माय नमः। आनन्द कन्दाय नमः। संविन्नलाय नमः। विश्वमय पत्राय नमः प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। लिपिमय कर्णिकायै नमः।

अं अर्क मण्डलाय नमः । उं सोम मण्डलाय नमः । मं वन्हि–मण्डलाय नमः । सं सत्वाय नमः । रं रजसे नमः । तं तमसे नमः । आं आत्मने नमः । अं अन्त-रात्मने नमः । पं परमात्मने नमः । ह्रीं ज्ञानात्मने नमः चतुर्दिश मध्ये ज्ञान तत्त्वात्मने नमः । कला तत्त्वात्मने नमः । विद्या तत्त्वात्मने नमः । पर तत्त्वात्मने नमः ।

विशेष पीठ पूजा

ॐ उग्रायै नमः । उग्रचण्डायै नमः । चामुण्डायै नमः । प्रचण्डायै नमः । विकटायै नमः । उत्कटायै नमः संकटायै नमः । चण्डयोगिन्यै नमः । चण्ड उग्रायै नमः। प्रभायै नमः । मायायै नमः । जयायै नमः । सूक्ष्म्यै नमः । विशुद्धायै नमः । नन्दिन्यै नमः । सु प्रभायै नमः विजयायै नमः सर्व सिद्धिदायै नमः ।

प्रथम भूत शुद्धि न्यासादि कर गणपत्यादि वैदिक पूजा करे । घट स्थापन पात्र सादन कर घट के ऊपर पीठ पूजा करे व चौकी पर करे ।

फिर जल लेकर बांई तरफ को डाल देवै ।

ते सर्वे विलयं यान्तु, ये मां हिंसन्ति हिंसकाः ।
मृत्यु रोग भय क्लेशाः पतन्ति रिपु मस्तके ॥

भदराय नमः१ गुं गुरुभ्यो नमः । स्व गुरु पादुकां पूजयामि, तर्पयामि, नमस्करोमि ।

परम गुरुभ्यो नमः परम गुरु पादुकां पूजयामि तर्पपरमेष्टि गुरुभ्यो नमः परमेष्टि गुरु श्रीपादुकां पूपं परात्पर गुरुभ्यो नमः परात्पर गुरु श्रीपादुकां पू-पीठ दक्षिण भागे सम्पूज्य ।

गं गणपतये नमः गणपति श्रीपादुकां पूजयामि दुं दुर्गायै नमः दुर्गा श्रीपादुकां पूजयामि क्षं क्षेत्र पालाय नमः क्षेत्रपाल श्री पादुकां पूजयामि पीठ वाम भागे सम्पूज्य ।

प्रथम दश वक्त्रा महाकाली आवरणार्चन विनियोग :--
हाथ में जल लेकर पात्र में जल छोड़ देवें ।

अस्य श्री दशवक्त्रा महाकाली ईशान आम्नायात्मिका नायका मंत्रस्य ब्रह्मा-ऋषि गायत्री छन्दः नन्दजा शक्तिः रक्तदन्तिका बीजं पंच वक्त्रा महाकाली

प्रत्येक देवता की सर्वसाधारण और विशेष पीठ पूजा होती है । पीठ पूजा होने पर ही देवता का सिंहासन चैतन्य होता है ।

१—गुरु पूजा यन्त्र के पूजा के त्रिकोण में व द्वितीय आवरण में फट लेनी चाहिये ।

कीलकं अग्नि तत्वं ह्रीं वीजं ऋग्वेदस्वरूपं दश वक्त्रा महाकाली प्रसादा दात्मनोऽभीष्ट फल प्राप्ति हेतवे अर्चन (जपे) विनियोग: । अथ हृदया न्यास: ।

ॐ हृदयाय नम: । ऐं शिरसे स्वाहा क्लीं शिखायै वषट् । महाकाल्यै कवचाय हुँ । विच्चे नेत्र त्रयाय वौसट् । ॐ ऐं क्लीं महाकाल्यै विच्चे अस्त्राय फट् । एवं करन्यासं कृत्वा ध्यानं कुर्य्यात्–

(हृदय न्यास एवं करन्यास करके अधोमुख स्वाधिष्ठान जो पूर्वाम्नायात्मिक है उत्तराम्नायात्मिक विशुद्ध आधा विशुद्ध और आधा स्वाधिष्ठान मिल कर अधो मुख स्वाधिष्ठान बनता है इसके ग्यारह पत्ते हैं । मिश्रित रंग है । इस अधो मुख स्वाधिष्ठान चक्र में रुद्र भैरव के साथ महाकाली दशवक्त्रा का ध्यान करे)

ध्यानम्–

ओं खड्गं चक्र गदेषु चाप परिधाञ्छूलं भुशुण्डीं शिर: ।
शङ्खं सन्दधतीं करै स्त्रिनयनां सर्वाङ्ग भूषावृताम् ।।
नीलश्म द्युति मास्य पाद दशकां सेवे महाकालिकाम् ।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमल जो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।

(फिर सिंहासन पर प्राण प्रतिष्ठा कर मानसिक पूजा करे यथाशक्ति मन्त्र जप कर नासिका के प्रवास द्वारा भावना

से युगल मूर्त्ति को बाहर यन्त्र स्थापित कर वाह्य पूजा करे) प्रथम आवहन करे।

महा पद्म वनान्त स्थे कारआनन्द विग्रहे।
सर्व भूत हिते मातरहिह्य हि परमेश्वरि ॥

ॐ ऐं क्लीं महाकाल्यै विच्चे ह्रौं रुद्राय नमः ब्रह्मा सहित महाकाली चामुण्डा इहागच्छत इहतिष्ठत स्वागतं समर्पयामि, आवाहिता भव, संस्थापिता भव, सन्निधाभव, सन्निरुद्धा भव, सम्मुखी भव, अवगुण्ठिता भव, (इन मुद्राओं को दिखावै)

१ सकलीं करणं कुर्य्यात् (मन्त्र में सट्कोण कल्पना कर न्यास करे) मूलं ॐ हृच्छक्त्यै नमः हृदय शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ऐं शिरः शक्त्यै नमः। शिर शक्ति श्रीपादुकां

---

१ सकली करण यन्त्रस्थ हृदयादि छै अंगों को चैतन्य की भावना से किया जाता है। यह आवहनादि के बाद ही किया जाता है। कुछ यन्त्रस्थ त्रिकोण की पूजा के बाद करते हैं। उत्तम पक्ष पूर्वा का ही है।

२ श्रीपादुकां पूजयामि, तर्पयामि, नमस्करोमि, श्रीपादुका-पाठ आते ही बोल देना चाहिये।'

३ मूलमन्त्रत्तदीय देवता का लगने से आवरण पूजा एवं केवल नाम मात्र से खड्गमाला बन जाती है।

पूजयामि क्लीं शिखा शक्त्यै नमः । शिखा शक्ति-श्री-पादु महाकाल्यै कवच शक्त्यै नमः कवच शक्ति श्रीपादुकां विच्चे नेत्र शक्त्यै नमः नेत्र शक्ति श्रीपादुकां ॐ ऐं क्लीं महाकाल्यै विच्चे अस्त्र शक्ति श्रीपादुकां

परमी कृताभव धेनु योनि मुद्रां प्रदर्श्य ।

(फिर धेनु और योनि मुद्रा दिखावै और देवता से स्थिर होने की प्रार्थना करे)

मूलं देवेशि भक्ति सुलभे, परिवार समन्विते ।
यावत्वं पूजयिष्यामि, तवत्वं सुस्थिरा भव ।।

यन्त्रोपरि अष्टधा मूल मुच्चार्य्य प्राण प्रतिष्ठां कुर्य्यात्

(यन्त्र पर आठ बार मूल मन्त्र पढ़ें और फिर यंत्र पर अनामिका अंगुष्ट रख कर प्राण प्रतिष्ठा' करे)

ॐ आं, ह्रीं, क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ब्रह्मा भैरव सहिताय महाकाली चामुण्डा प्राणाः इह प्राणाः जीव इह जीव ॐ आं ह्रीं क्रीं यं.........क्षं ब्रह्मा भैरव सहिताय महाकाल्याः चामुण्डा सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ।

१ ॐ आं...क्षं ब्रह्मा भैरव सहिताय महाकाली

---

१ स्वर्ण आदि के यन्त्र पर प्राण प्रतिष्ठा एक बार ही विधिवत् हो जाती है यदि यन्त्रस्थ देवता का विसर्जन हो जाये तो फिर करे। जो साधक जल अग्नि यन्त्र आदि पर नित्य आवाहन करते हैं और नित्य विसर्जन करते हैं उन्हें नित्य ही प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिये। प्राण प्रतिष्ठा से मूर्त्ति चैतन्य होती है।

चामुण्डाये वाड् मन स्त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राण इहै वागत्य सुखं चिरं तिष्टन्तु स्वाहा। वार त्रयं पठेत ॐ सोडश वार मुच्चार्य सोडश संस्कारात् सम्पादयामि चैतन्यं कल्पयामि ।

(उपरोक्त तीन बार पढ़ कर प्राण सहित सर्वाङ्ग चैतन्य की भावना करै) फिर सोलह वार ॐ कार उच्चारण करके मूर्त्ति के सोडश संस्कार हो गये हैं यह कल्पना करे ।

२ पुनः यथालव्धोप चारै पूजनं कुर्य्यात्

(भावना प्रेम भक्ति से शुद्ध की हुई वस्तुओं से पूजा करे)

मूलं आसनं समर्यामि—पुष्पासन कुशासन आदि देवै ।
पादयो पाद्यम् – चरण धोने को जल दे ।
हस्तयोरर्घ्यं स्वाहा -- हाथ धोने को जल दे ।
मुखे आचमनीयं स्वधा -- मुख में आचमन दे ।
मुखे इदं मधुपर्कं स्वधा -- मधुपर्क दे ।
(अनामिका गुष्ठ योगेन अधोमुख मुद्रां प्रदपूर्यं)

(अनामिका मध्यमा के पास वाली अंगुली और अंगूठा को मिला कर पत्ते पर रख कर नीचे को अंगुली अंगूठा का मुख करके मुद्रा दिखा कर अर्पण करे तीन बार)

---

२ नव दुर्गाओं में जितनी विषेश पूजा करोगे, उतना ही विशेष फल प्राप्त होगा, पूजा में वित्त शाठ्य नहीं करना चाहिये। कर्ज करके भी पूजा सुन्दर आत्म प्रिय वस्तुओं से श्रद्धा प्रेम भक्ति से करनी चाहिये । पूजाया लभते पूजा ।

सर्वांगे स्नानीयं हरिद्रा तैलं सुगन्धि द्रव्यं उद्वर्तनं समर्पयामि – स्नान सुगन्धि द्रव्यों से करावै।
वस्त्र युगलं समर्पयामि – दो वस्त्र चढ़ावै व कलाया दो चढ़ावै।
यज्ञोपवीतं आभरणं समर्पयामि - जनेऊ भूषण चढावै।
अधिरोहण परिवार देवताभि सेह परिकल्पयामि।

(भगवति का सारा परिकर आ रहा है बैठ रहा है ऐसी कल्पना करें)

गंधं विलेपयामि

कुंकुम हरिद्रा सिन्दूर परिमल द्रव्याणि समर्पयामि)

(रोली, हरदी, सिन्दूर, गुलाल, मेंहदी, चूड़ी, काजल, सिंदरफ चढ़ावें)

३ रक्ताक्षतान् समर्पयामि— लाल चावल चढ़ावै।
पुष्पाणि समर्पयामि वौसट्

४ धूप माध्रापयामि - देवता के बायें तरफ धूप मुद्रा से धूप देवै। अक्षत डाल दे

---

१ पूजा के सभी द्रव्यों को मन्त्रों द्वारा शुद्ध कर आचमन आदि पात्रों को पहले ही विधि पूर्वक स्थापन करके उन्हीं पात्रों से पूजा करनी चाहिये।

२ आचमन स्नान वस्त्र, यज्ञोपवीत, मधुपर्क, नैवेद्य के बाद देना चाहिये।

३ भगवति पर सदैव रक्त चावल ही चढ़ाने चाहिये।

४ स्वाहा स्वधा वौसट्र का प्रयोग तन्त्र में देव पूजा में होता है।

प्रत्यक्ष दीपं दर्शयामि - जो कर्म साक्षी दीपक है उस पर चावल डाल देंगे ।

नैवेद्यं निवेदयामि -

(पात्रे नैवेद्यं धृत्वा फट् मन्त्र जलेन संप्रोक्षयेत्)

(पात्र में विन्दु त्रिकोण लिखकर भोग रख कर फट् बोलता हुआ भोग को जल का छींटा लगावें)

मूलं मुच्चार्य्य सदर्भं शंख (विशेषार्घ्यं) स्थ जलेन सप्तधा प्रोक्ष्य । चक्र मुद्रयाभि रक्ष्य ।

(मूल मन्त्र बोल कर शंख के जल व विशेषार्घ्य जल से सात वार छींटा दे चक्र मुद्रा दिखा कर रक्षा की भावना करे)

वायु (यं) वीजेन द्वादशवाराभि मन्त्रत जलेन हविः प्रोक्ष्य तदुत्थ वायुना तद्दोषं संशोध्य ।

(यं बीज से बारह बार अभिमन्त्रित करके भोग में जल के छींटे लगावें भावना करे कि वायु द्वारा भोग के दोष नष्ट हो रहे हैं)

दक्षिण कर तले अग्नि (रं) बीजं विचिन्त्य । तत्पृष्टे वाम करतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य तदुत्थाऽग्निना तद्दोषं दग्ध्वाआठ बार रं बीज बोले ।

(दाहिने हाथ पर रं बीज का ध्यान कर उस पर बाया हाथ करके नैवेद्य को दिखावे भोग के दोषों को अग्नि बीज से जलाने की भावना करे)

वाम कर तलेऽमृत (वं) वीजं विचिन्त्य तत्पृष्ठे दक्षिण करतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्यं ।

बाये हाथलेटी पर वं बीज का ध्यान करे उस पीठ पर दाहिना हाथ रख नैवेद्य को दिखावे ।

तदुत्थामृत धारया प्लावितं विभाव्य मूल मन्त्रित जलेन संप्रोक्ष्य,

अमृतधारा की भावना से नैवेद्य को भीगा हुआ जाने फिर मूल मन्त्र पढ़कर जल से छिड़क दे ।

तदखिलममृतात्मकं ध्यात्वा तत्पृष्टना मूल मन्त्र मसृधा जप्त्वा धेनु मुद्रां प्रदर्श्यं ।

सम्पूर्ण नैवेद्य को अमृतात्मक भावना करे, उस पर मूल मन्त्र आठ बार जप करके धेनु मुद्रा दिखावे ।

जल गन्ध पुष्पै रभ्यर्च्य देवतायै पुष्पांजलिं समर्प्य ।

नैवेद्य को जल गंध फूल से पूजा करे, देवता को पुष्पांजलि देवें ।

तन्मुखा त्तेजोगत मिति ध्यात्वा वामां गुष्ठेन मुख्य नैवेद्य पात्रं स्पृष्ट्वा ।

देवता के मुख में तेज प्रकट हो रहा है ध्यान करे बांये अगूंठे से नैवेद्य को छूये ।

दक्षिण करेण जलं गृहीत्वा मूल मन्त्रं स्वाहान्तं द्वादशं पठित्वा नैवेद्यं समर्पयामि ।

दाहिने हाथ से जल लेकर मूल मन्त्र को स्वाहा तक बोलकर बारह बार पढ़कर नैवेद्य को अर्पण करे।

हस्ताभ्या मगुस्ठा नामिकाभ्यां नैवेद्य पात्रं त्रिपोद्धरन् निवेदयामि।

दोनों हाथ के अगुष्ठ और अनामिका अँगुली से पात्र को तीन बार लगा कर नैवेद्य को निवेदन करे।

भवतीदं जुषाणेदं हविः शिवे ॐ अमृतोपस्तरण मसि स्वाहेति देवि करे जलं समर्पयेत्।

उपरोक्त मन्त्र बोलता हुआ देवि के हाथ में जल देवै।

वाम करेण विकचोत्पल सदृशीं ग्रास मुद्राँ प्रदर्श्य, बाँये हाथ से ग्रास मुद्रा को दिखावे।

दक्षिण करेण स मन्त्रा ॐ प्राणाय स्वाहा, अंगुष्ठ अनामिका कनिष्टकाभिः। ॐ अपानाय स्वाहा, अंगुष्ठ मध्यमा नामिकाभिः उदानायस्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा अंगुष्ठ तर्जनी मध्यमा नामिकाभिः, ॐ समानाय स्वाहा, अंगुष्ठादि सर्वा गुलिभिः।

इस प्रकार दाहिने हाथ से मन्त्र बोल कर प्राण, अपान, व्यान।

उदान और समान पांचों प्राणों को भोजन देवै।

मध्ये मध्ये आचमनीयं समर्पयामि।

बीच बीच में जल से आचमन करावे।

उत्तरापोषणार्थे किंचिन्नैवेद्यं निवेदयामि। आच-मनीयं समर्पयामि।

सभी प्रकार के भोग थोड़ा थोड़ा करके चढ़ावै। आच-मन देवै।

हस्त मुख प्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

हाथ मुँह धोने को फिर जल देवें।

गत सारं नैवेद्यं नैतृत्यां उचिष्ठ चाण्डालिन्यै समर्प्य।

गत सार भोग को थोड़ा लेकर नैत्रृत कोण में उचिष्ठ चाण्डालिनी को दे देवें।

ताम्बूलं फट् मंत्रेण सम्प्रोक्ष्य,

पान को फट् मन्त्र बोल कर जल से छींटा लगा लेवें।

ताम्बूल एला लवङ्ग जायफल कर्पूरादि युतं समर्पयामि,

फिर पान का बीड़ा इलायची आदि युक्त चढ़ावें।

पूगीफलं–समर्पयामि–सुपाड़ी चढ़ावै।
यथा शक्ति दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि।

यथा शक्ति दक्षिणा चढ़ावै।

रं इति प्रज्वाल्य श्रीं ह्रीं ग्लूं श्लूं म्लूं प्लूं ब्लूं

ह्रीं श्रीं गदादिभिः सम्पूज्य, चक्र मुद्रां प्रदर्श्यास्त्रेण प्रोक्ष्ये घण्टा वादन पूर्वक आरार्त्तिक मन्त्रेण नीराजयेत्

उपरोक्त रं बीज से आरती जला कर बीज मन्त्रों से पूजा करके चक्र मुद्रा दिखा कर आरती को छींटा देकर घण्टा बायें हाथ से बजाता हुआ आरती संस्कृत वेद हिन्दी आदि में बोलता हुआ विधिवत् आरती करें —

शंखोदकेन संप्रोक्ष्य

शंख जल से आरती कर छींटा लगावें।

पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। क्षमायाचनां कुर्य्यात्। मानसिक प्रदक्षिणा पूर्वक प्रणामं कुर्य्यात्।

फिर आवरण पूजा के लिए भगवति काली से आज्ञा प्राप्त करे,

ॐ संविन्मयि परे देवि, परामृत रसप्रिये।
अनुज्ञां देहि देवेशि, परिवारार्चनाय मे॥

मूलं सिद्ध लक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि रक्त दन्तिका श्रीपादु-पंच वक्त्रा महाकाली श्रीपादु नन्दजा श्रीपादुका-ॐ ऐं क्लीं महाकाल्यै विच्चे, ह्रौं।

---

१ कहीं कहीं पुष्प चढ़ाने के बाद बीच में आवरण पूजा कर फिर धूप दीपादि पूजा करते हैं उत्तम पक्ष पूरी प्रधानदेव पूजा के बाद आज्ञा गृहण करके आवरण पूजा करनी चाहिये।

रुद्राय नमः (मध्ये विन्दौ) श्री पादुकां पूजयामि-लक्ष्मी श्रीपादु-ललिता श्रीपादु-काली श्रीपादु-दुर्गा श्रीपादु-अरुन्धती श्रीपादु-श्रीसरस्वती श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि । पाद्यादिभि सम्पूज्य (पाद्य से लेकर पुष्पाञ्जलि तक पूजन करे ।

एताः प्रथमा वरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः स शक्तिकाः पूजिताः स्तर्पिता सन्तु नमः । पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणा गत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा वरणाचनम् ॥
प्रथमा वरण देवताभ्यो नमः

मूलं ॐ दिव्योद्य गुरुभ्योनमः दिव्य गुरु श्रीपादुकां
ॐ सिद्धौद्य गुरुभ्योनमः सिद्ध गुरु श्रीपादुकां·
ॐ मानवौद्य गुरुभ्यो नमः मानव गुरु श्रीपादुकां-
३ अमुक स्वगुरु नाथ तचछक्त्यम्बा श्रीपादुकां·
अमुक परमगुरु नाथ तचछक्त्यम्बा श्रीपादुकां-

---

२ रुद्र भैरव त्रिनेत्र त्रिशूल डमरू रुद्राक्ष खप्पर चतुर्भुजी हैं नाग यज्ञोपवीत कंकड बाजूवन्द भी नाग के ही है।

३ अपने गुरु का उनकी शक्ति के साथ नाम लेकर पूजन करे। परमगुरु–दादागुरु व सम्प्रदायाचार्य को कहते हैं।

१ अमुक परमेष्टि गुरुनाथ तच्छक्त्यम्बा श्रीपादु परात्पर गुरु नाथ तच्छक्त्यम्बा श्रीपादु-अष्टदले । मूलं जया श्रीपादुकां-विजया श्रीपादु-कीर्त्ति श्रीपादु–प्रभा श्रीपादु-श्रद्धा श्रीपादु-मेधा श्रीपादुकां-श्रुति श्रीपादु का पू० त० नमस्करोमि,

पुष्पाञ्जलिंदद्यात् –

एताः द्वितीया वरण देवताः साङ्गा-तर्पिताः सन्तु-अभीष्ट सिद्धि मे – द्वितीया वरणार्चानम् ॐ द्वितीया-ऽऽवरण देवताभ्यो नमः ।

तृतीया वरणे अष्टदल पद्मे

मूलं जयदा श्रीपादुकां-विजयदा श्रीपादुकां भद्र-काली श्रीपादु-सुमुखी श्रीपादु दुर्मुखी श्रीपादु-संज्ञा

---

१ स्वेष्ट ही गुरु है । अखण्ड मण्डलाकार ही परात्पर गुरु है ।

२ गुरु पात्र से गुरु अर्चन करे । ३-पूजन पूर्व से क्रमशः होता है ।

३ अपने से दाहिने क्रमशः आवरण देवताओं का पूजन करे ।

४ प्रत्येक आवरण के बाद पाद्यादि से पूजन कर पुष्पांजलि देकर अभीष्ट सिद्धि बोले । कामना हो तो कामना बोले

५ कहीं दायें हाथ से पूजन और बाँये हाथ से साथ-साथ तर्पण करते हैं ।

श्रीपाव्याघ्रमुखी श्रीपादुकां सिंहमुखी श्रीपादुकां

पाद्यादिभि सम्पूज्य पुष्पांजलिं दद्यात् एताः तृतीया वरण देवताः सांगाः–तर्पिताः सन्तु अभीष्ट सिद्धि मे-तृतीया वरणार्चनम् तृतीयावरण देवताभ्योनमः

चतुर्था वरणे द्वादश दल पद्मे मूलं दुर्गा श्रीपादुकां-आद्या श्रीपादु-वरदा श्रोपादुर्विध्यवासिनी श्रीपादु-असुर मर्दनी श्रीपादु-युद्ध प्रिया श्रीपादु-देव पूजिता श्रीपादु-सिद्ध पूजितानन्दनी श्रीपादु-महायोगिनी श्रीपादु–

परा श्रीपादु-अपरा श्रीपादु-पाद्यादिभि सम्पूज्य। एताः चतुर्थाऽऽवरण देवता सांगा-पुष्पांजलि दद्यात्।

अभीष्ट सिद्धि मे - - चतुर्थावरणार्चनम् चतुर्था वरण देवताभ्यो नमः

पंचमावरणे अष्ट दल पद्मे पूर्वदिभिः सम्पूज्य मूलं आर्य्या श्रीपादु-दुर्गा श्रीपादु-भद्रा श्रीपादु भद्रकाली श्रीपादु-अम्बिका श्रींपादु क्षेमा श्रीपादु देवगर्भा श्रीपादु-क्षेमकरी श्रीपादुकां पू०तर्पयामि

गन्धादिभिः सम्पूज्य एताः पञ्चमावरण देवताः सांगाः - - तर्पिताः सन्तु अभीष्ट सिद्धि मे देहि - - - पञ्चमावरणार्चनम् पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः

षष्ठावरणे चतु सष्ट्रि पद्म चतुः सष्ट्रि योगिनी-मूलं—१ जया श्रीपादुकां २ विजया श्रीपादु ३ जयन्ती श्रीपादुकां ४ अपराजिता श्रीपादु–५ दिव्य योगिनी श्रीपादु--६ महायोगिनी श्रीपादु--७ सिद्ध योगिनी श्रीपादु ८ गणेश्वरी श्रीपादु ९ प्रेताक्षी श्रीपादु १० डाकिनी श्रीपादु ११ कामिनी श्रीपादु १२ कालरात्रि श्रीपादु १३ टंकारणी श्रीपादु १४ रौद्री श्रीपादु १५ वेताली श्रीपादु १६ हंकारी श्रीपादु १७ ऊर्द्ध केशीनी श्रीपादु १८ विरुपाक्षी श्रीपादु १९ शुष्कांगी श्रीपादु २० नर भोजनी श्रीपादु २१ फैंङ्करी श्रीपादु २२ चोरचन्द्री श्रीपादु २३ धर्माक्षी श्रीपादु २४ कलह प्रिया श्रीपादु २५ राक्षसी श्रीपादु २६ घोररक्ताक्षी २७ विश्वरूपी श्रीपादु २८ भयंकरी श्रीपादु २९ चण्ड-मारी श्रीपादु ३० वाराही श्रीपादु ३१ मुण्ड धारिणी श्री पादु ३२भैरवी श्रीपादु ३३ उर्ध्वाक्षी श्रीपादु ३४ दुर्मुखी

तर्पण – तीन बार किया जाता है। श्री पात्र से सबका करे योगिनी पात्र से योगिनीओं का भैरव पात्र से भैरवजी का एवं पूजा पात्र से सबका करे। पात्र समापन न कर सके तो श्रीपात्र से ही सब का करना चाहिये।

पुष्पान्जलि से पूजा पूर्ण मानी जाती है अतः प्रति आवरण पर पुष्पान्जलि अवश्य करे।

श्रीपादु ३५ प्रेत वाहिनी श्रीपादु ३६ खट्वाङ्गी श्रीपादु ३७ लम्बोस्ठी श्रीपादु ३८ मालिनी श्रीपादु ३९ मति योगिनी श्रीपादु ४० काली श्रीपादु ४१ रक्ताश्री श्रीपादु ४२ कंकाली श्रीपादु ४३ भुवनेश्वरी श्रीपादु ४४ त्रोटांकी श्रीपादु ४५ महामारी श्रीपादु ४६ यमदूती श्रीपादु ४७ विकराली श्रीपादु ४८ केशिनी श्रीपादु ४९ मेदिनी श्रीपादु ५० रोमगंगा श्रीपादु ५१ विडाली श्रीपादु ५२ कान्ता श्रीपादु ५३ लोला श्रीपादु ५४ जया श्रीपादु ५५ अघोरमुखी श्रीपादु ५६ चण्डोग्र धारिणी श्रीपादु ५७ व्याघ्री श्रीपादु ५८ कांक्षणी श्रीपादु ५९ प्रेत भक्षिणी श्रीपादु ६० धूर्जटी श्रीपादु ६१ विकटा श्रीपादुकां ६२ घोरा श्रीपादु ६३ कपालिनी श्रीपादु ६४ विसलम्बिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

(इसी छटे आवरण में काली मातृकाओं का अर्चन होगा ।)

काली, लक्ष्मी, सरस्वती त्रिशक्ति सभी की पृथक्-पृथक् चौसठ योगिनी हैं । जिनका पृथक्-पृथक् ध्यान भी है वैसे जैसा नाम है वैसा ही ध्यान है । मातृका सभी की पृथक् २ होती हैं । इनकी कोई नियत संख्या नहीं होती है । पूजन अत्यन्त आवश्यक है ।

अथ काली मातृका पूजनम्

मूलं काली श्रीपादु-कपालिनी श्रीपादु-कल्ला श्रीपादु-कुरु कुल्ला श्रीपादु-विरोधिनी श्रीपादु-विप्र चित्ता श्रीपादु-उग्रोग्रा श्रीपादु-प्रभा श्रीपादु-दीप्ता श्री-पादु-नीला श्रीपादु-धन श्रीपादु-वलाका श्रीपादु-मातृ श्रीपादु-मुद्रा श्रीपादु-मिता श्रीपादु-ब्राह्मी श्रीपादु नारायणी श्रीपादु-महिशी श्रीपादु-चामुण्डा श्रीपादु-परा श्रीपादु-कौमारी श्रीपादु-पंचमी श्रीपादु-अपरा-जिता श्रीपादु-वाराही श्रीपादु-नारसिंही श्रीपादु-भैरवी श्रीपादु-महा श्रीपादु-आद्या भैरवी श्रीपादु-सिंह भैरवी श्रीपादु-धूम्रा भैरवी श्रीपादु भीमा भैरवी श्रीपादु-उन्मत्त भैरवी श्रीपादु-वशीकरण भैरवी श्रीपादु-मोहनाद्या भैरवी श्रीपादु-ऐन्द्रा भैरवी श्रीपादु आग्नेय भैरवी श्रीपादु-याम्या भैरवी श्रीपादु-राक्षसी भैरवी श्रीपादु-वारुणी भैरवी श्रीपादु-वायवी भैरवी कौवेरी भैरवी श्रीपादु-ईशानी भैरवी इन्द्राणी भैरवी श्रीपादु-ब्रह्माणी श्रीपादु-वैष्णवी श्रीपादु-वज्रिणी श्रीपादु-शक्तिनी श्रीपादु दण्डिनी श्रीपादु-खड्गिनी श्रीपादु-पाशनी श्रीपादु-अंकुशिनी श्रीपादु-गदनी श्री-पादु- शलिनी श्रीपादु-मालिनी श्रीपादु-चक्रिणी श्री पादुकां पूजयामि नमस्करोमि ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य। एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गाः-अभीष्ट सिद्धि मे देहि......षष्ठावरणार्चनम् ॥ षष्ठावरण देवताभ्यो नमः, पुष्पांजलिं दद्यात्।

अथ सप्तमा वरणार्चनम् दश दल पद्मे,

मूलं लं इन्द्र श्रीपाद०, रं अग्नि श्रीपाद०, यं यम श्रीपाद०, वं वरुण श्रीपाद०, यं वायु श्रीपाद०, सं सोम श्रीपादु०, हं ईशान श्रीपादु०, ह्रीं अनन्त श्रीपादु०, अं ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि नमस्करोमि। क्षं नैऋति

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः सप्तमावरण देवता साङ्गाः-अभीष्ट सिद्धि मे देहि......सप्तमावरणार्चनम्। सप्तमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पांजलिं दद्यात्।

अथ अष्टमावरण देवतार्चनम्---

मूलं वं वज्र श्रीपादु०, शं शक्ति श्रीपादु०, दं दण्ड श्रीपादु०, खं खड्ग श्रीपादु०, पां पाश श्रीपादु०, अं अकुश श्रीपाद०, गं गदा श्रीपाद०, त्रि त्रिशूल श्रीपादु०, चं चक्र श्रीपादु०, पं पद्म श्रीपाद०,

दश विषेश आयुध, खं खड्ग श्रीपाद०, चक्र श्री पाद०, गदा श्रीपाद०, इसु श्रीपादु०, धनु श्रीपादु०, परिघ श्रीपाद०, शूल श्रीपाद०, भुशुण्डि श्रीपाद०,

शिर: श्रीपादु०, शंख श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एता: अष्टमावरण देवता सांगा:----अभीष्ट सिद्धि मे देहि......अष्टमा वरणार्चनम् । अष्टमावरण देवताभ्यो नम:, पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

मूलं वं वटुकाय नम: वटुकश्रीपादुकां०,यं योगिनी श्रीपादु०, क्षं क्षेत्रपाल श्रीपादु०, गं गणपति (गं विघ्नाय नमः) श्रीपादु०, अष्ट वसु: श्रीपादु०, द्वादशादित्यः श्रीपादु०, एकादश रुद्रः श्रीपादु०, सर्वभूत श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि---

पाद्यादिभि सम्पूज्य---अभीष्ट सिद्धि मे देहि......नवमावरणार्चनम् नवमावरण देवताभ्यो नम:, पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

तत्व मुद्रा से विषेशार्घ्य देवे ।

मूलं आत्म तत्व व्यापिका श्रीमहाकाली चामुण्डा सांगाः सपरिवारां सायुधः सशक्तिकाः तृप्यन्तु ।

मूलं विद्या तत्व व्यापिका श्रीमहाकाली चामुण्डा सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः तृप्यन्तु । मूलं शिव तत्व व्यापिका श्रीमहाकाली चामुण्डा सांगा-सपरिवारः सायुधः सशक्तिकाः तृप्यन्तु ।

मूलं सर्वतत्व व्यापिका श्रीमहाकाली चामुण्डा सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः तृप्यन्तु ।

(फिर यथाशक्ति पूजा पूर्णता के लिए जप करे ।)

गं विघ्नाय नमः ।

ॐ ऐं क्लीं महाकाल्यै विच्चे । ॐ हौं रुद्राय नमः । ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं । ऐं गुरुवे नमः ।

कृतेनानेन पूजनेन श्रीगुरु जगदम्बा महाकाली प्रसादात् सर्वं परिपूर्णमस्तु फलं दद्यात् ।

फल चटा देवें । फल चटाने से पूजा फल की प्राप्ति होती है ।

*** शुभम् ***

चारों कोण आम्नाय मिलकर पश्चिम आम्नाय बने हैं पश्चिम आम्नाय का गणपति मंत्र गं विघ्नाय नमः ये षडाक्षरी है । गणपति और वटुक भगवती के सर्वे-सर्वा हैं । वो ही सारा कार्य पूर्ण करते हैं भगवति तो मोक्ष करने को ही उठती है सारे लौकिक पारलौकिक सब कार्य्य ये ही करते हैं अतः आदि में गणपति मध्य में काली ब्रह्मा पश्चात् वटुक मंत्र जपने से पूजा की अपूर्णतादि दोष समाप्त होते हैं।

श्रीमहालक्ष्मी चामुण्डा की विशेष पीठ पूजा अक्षत डाल कर करे।

ॐ विभूत्यै नमः, ॐ उन्नत्यै नमः, कान्त्यै नमः, हृष्ट्यै नमः, कृत्यै नमः, समुन्नत्यै नमः, व्योष्ट्यै नमः, उत्कटायै नमः, ऋद्ध्यै नमः, जयायै नमः, विजयायै नमः, अजितायै नमः, अपराजितायै नमः, नित्यायै नमः, विलासिन्यै नमः, द्रोग्ध्यै नमः, अघोरायै नमः, मंगलायै नमः महालक्ष्म्यै नमः दुर्गायै नमः।

शाकम्भर्य्यै नमः, काल्यै नमः, तारायै नमः, छिन्नायै नमः, सुमुख्यै नमः, भुवनेश्वर्य्यै नमः, वालायै नमः, कुब्जिकायै नमः, वलाकायै नमः, विमलायै नमः, कमलायै नमः, वनमाल्यै नमः, विभीषिकायै नमः, शांकर्य्यै नमः,वसुमालिकायै नमः, व्राह्म्यै नमः, गायत्र्यै नमः हर सावित्र्यै नमः, रुद्रायै नमः, शारदायै नमः, धनदायै नमः, कौमार्यै नमः, रत्यै नमः, गणनायै

नमः, पुष्टयै नमः, शंख्यै नमः, वसुधायै नमः, पद्मायै नमः,वसुमत्यै नमः,अनंग कुसुमायै नमः,अनंगायै नमः, अनङ्ग कुसुमातुरायै नमः, अनंगमदनायै नमः, अनंग मदनातुरायै नमः, भुवन पालायै नमः, गगन वेगायै नमः, शशि रेखायै नमः, गगन रेखायै नमः, करलिन्यै नमः, विकरात्यै नमः, उमायै नमः, सरस्वत्यै नमः, श्रियै नमः, दुर्गायै नमः, ऊषायै नमः, लक्ष्म्यै नमः श्रुत्यै नमः, स्मृत्यै नमः, भूत्यै नमः, श्रृद्धायै नमः, मेधायै नमः, मृत्यु कालायै नमः, ऊर्घायै नमः, ।

अथ मध्यम चरित्रावरण पूजा-विनियोगः

अस्य श्रीमहालक्ष्मी आग्नेय आम्नायात्मिका महालक्ष्मी नवार्ण मंत्रस्य विष्णु ऋषि महालक्ष्मी देवता उष्णिक् छन्दः शाकम्भरी शक्तिः दुर्गा बीजं बगला कीलकं वायु स्तत्वं यजुर्वेद मूर्तिः महालक्ष्मी प्रसादात् आत्मनोऽभीष्ट फल प्राप्ति हेतवे आवरण पूजने जपे विनियोगः ।

न्यासः—ॐ हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा । श्रीं शिखायै वषट् महालक्ष्म्यै कवचाय हुं विच्चे नेत्र त्रयाय वौषट् ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे अस्त्राय फट् एवं कर न्यासं कुर्य्यात् महालक्ष्मी ध्यानम्......

अक्षस्त्रक परशुं गदेशु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां ।
दण्डं शक्ति मसिञ्च चर्मं जलजं घण्टां सुरा भाजनम् ॥
शूलं पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रवाल प्रभां ।
सेवे सैरिभ मर्दिनी मिह महालक्ष्मीं सुरौजोद्भवाम् ॥

उपरोक्त ध्यान दक्षिण आम्नाय मणिपुर एवं पूर्व आ-म्नाय स्वर्गाधिष्ठान मिलकर आग्नेय आम्नाय बनता हैं ये द पत्ते का अधोमुख चक्र हैं। रंग मिश्रित मणिपुर और स्वाधि-ष्ठान का हैं। मणिपुर के अधोमुख चक्र में महालक्ष्मी का विष्णु भैरव के साथ ध्यान करे। शंख चक्र गदा पद्म चार भुजाओं में धारण किया है। रुद्राक्ष माला विषेश हैं त्रिनेत्र हैं. सर्प यज्ञोपवीत हैं। ऐसा विष्णु भैरव का ध्यान करे। फिर हृदय सिंहासन पर प्राण प्रतिष्ठा कर मानसिक पूजा करे। यथा शक्ति मंत्र जप कर नासिका श्वास द्वारा भावना से युगल मूर्त्तिओं को बाहर यंत्र पर स्थापित कर वाह्य पूजा करे।

महापद्म वनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे ।
सर्व भूत हिते मातरेहि ह्येहि परमेश्वरि ॥

ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे। ॐ ह्री श्रीं बिष्णवे नमः। विष्णु सहित महालक्ष्मी चामुण्डा इहा-गच्छत इह तिष्ठत स्वागतं समर्पयामि आवाहिता भव संस्थापिता भव, सन्निरुद्धा भव, सम्मुखी भव, अत्र-

गुण्ठिता भव, (इन मुद्राओं को दिखावें) सकली करणं कुर्य्यात् ।

ॐ हृदयाय नमः ॐ हृदय शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नम०,ॐ ह्रीं शिर शक्तये नमः शिर शक्ति श्रीपादु०, श्रीं शिखा शक्त्यै नम०,शिखा शक्ति श्रीपादु०,महालक्ष्म्यैं कवच शक्त्यै नमः कवच शक्ति श्रीपादु०,विच्चे नेत्र शक्त्यै नमः नेत्र शक्ति श्रीपादु०, ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्यै विच्चे अस्त्र शक्तये नमः अस्त्र शक्ति श्रीपादुकां, पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

परमीकृता भव धेनु योनि मुद्रां प्रदर्श्यः ।

मूलं देवेशि भक्ति सुलभे, परिवार समन्विते ।
यावत्वं पूजयिष्यामि, तावत्वं सुस्थिरा भवः ॥

यंत्रोपरि अष्टधा मूल मंत्र मुच्चार्य प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात् ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं सं सं हं लं क्षं विष्णु भैरव सहिताय महालक्ष्मी चामुण्डा-प्राणाः इह प्राणाः । जीव इह जीव ॐ आं ह्रीं क्रों........ विष्णु भैरव सहिताय महा लक्ष्मी चामुण्डा सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ।

ॐ आं ह्रीं क्रीं.........विष्णु भैरव सहिताय महालक्ष्मी चामुण्डा वांङ्ग मन स्त्वक् चक्षु श्रोत्र जिह्वा घ्राणाः प्राणा इहै वागत्य सुखं चिरंतिष्ठन्तु स्वाहा। वार त्रयं पठेत् ॐ षोडस बार मुच्चार्य्य षोडस संस्कारान् सम्पादयामि। चैतन्य मूर्त्तौ परि कल्पयामि।

१ मूलं आसनं समर्पयामि। पाद्यं अर्घ्यं, आचमनीयं, मधुपर्कं, आचमनीयं स्नानं, वस्त्रं, यज्ञोपवीतं, आचमनीयं, गंधंअक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं नैवेद्यं, आचमनीयं, ताम्बूलं, पूगीफलं, सुदक्षिणां समर्पयामि। आरार्त्तिकं, पुष्पाञ्जलिं, क्षमा याचना प्रदक्षिणा प्रणामं कुर्य्यात्।

फिर आवरण पूजा को आज्ञा प्राप्त करे।

ॐ संविन्मयि परे देवि, परामृत रस प्रिये।
अनुज्ञां देहि देवेशि, परिवारार्चनाय मे॥

प्रथमावरण पूजा–

मूलं महालक्ष्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि।

दुर्गा श्रीपादु०, शाकम्भरी श्रीपादु०, काली श्रीपादु०, ताराश्रीपादु०, छिन्नाश्रीपादु०, सुमुखीश्रीपादु०, भुवनेश्वरी श्रीपादु०, बाला श्रीपादु०, कब्जिका श्रीपादु०, मध्ये-ॐ ह्रीं

श्रीं महालक्ष्मी विच्चे ॐ ह्रीं श्रीं विष्णवे नमः, महा-लक्ष्मी चामुण्डा सहित विष्णु भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि, नमस्करोमि ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य—

एताः प्रथमावरण देवता साङ्गाः सपरिवार सायुध सं शक्तिकाः पूजितास्तर्पिताः सन्तु ।

अभीष्ट सिद्धि मे देहि–शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

प्रथमावरण देवताभ्यो नमः ।

द्वितीयाऽवरणे अष्ट दल पद्मे सम्पूज्य ।

मूलं दिव्यौघ । सिद्धघ मानवौघ गुरुभ्यो नमः गुरु-त्रयः श्रीपादु०,गुरु, परमगुरु, परमेष्टि, परात्पर गुरुभ्यो नमः गुरु चतुष्टयःश्रीपादु०,श्रीवलाका श्रीपादु०-विमला श्रीपादु०, कमला श्रीपादु०,वनकालिका श्रीपादु०,विभी-षिका श्रीपादु०,मालिका श्रीपादु० शंकरी श्रीपादु०,वसु मालिका श्रीपादुकां पू० त० नमस्करोमि ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य·एताः द्वितीयाऽवरण देवता

पूजा की सारी बातें महाकाली पूजा में लिख चुके हैं, संक्षिप्त में यहाँ दी गयीं हैं ।

साङ्गाः--अभीष्ट सिद्धि मे देहि......द्वितीयाऽवरणार्चनम् ।

द्वितीयाऽवरण देवताभ्यो नमः ।

तृतीयाऽवरण पूजा अष्ट दल पद्मे ।

मूलं ब्रह्मा गायत्री श्रीपादु०-हर सावित्री श्रीपादु० रुद्र शारदां श्रीपादु० धनद धनदा श्रीपादु० काम रति श्रीपादु०- गणना पुष्टि श्रीपादु०- शंखनिधि वसुधा श्रीपादु०-पद्मनिधि वसुमति श्रीपादुकां पूज--

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः तृतीयाऽवरण देवता साङ्गाः-अभीष्ट सिद्धि मे देहि- तृतीयाऽवरणार्चनम् । तृतीयावरण देवताभ्यो नमः । पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

चतुर्थाऽवरण पूजा अष्ट दले

मूलं अनङ्ग कुसुमा श्रीपादु०, अनङ्ग कुसुमातुरा श्रीपादु० अनङ्ग मदना श्रीपादु०-अनङ्ग मदनातुरा श्रीपादु०-भुवनपाला श्रीपादु०-गगन वेगा श्रीपादु०-शशि-रेखा श्रीपादु० गगन रेखा श्रीपादु०--

पाद्यादिभिः सम्पूज्य, एताः चतुर्थाऽवरण देवता साङ्गाः अभीष्ट सिद्धि मे देहि......चतुर्थावरणार्चनम् चतुर्थाऽवरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

पंचमाऽवरण पूजा षोडश दले ।

मूलं कराली श्रीपादु०- विकराली श्रीपादु० उमा

श्रीपादु०-सरस्वतीश्रीपातु०-श्री श्रीपादु०-दुर्गा श्रीपादु० उषा श्रीपादु०,लक्ष्मी श्रीपादु०, श्रुति श्रीपादु०, स्मृति श्रीपादु०-भूति श्रीपादु०-श्रद्धा श्रीपादु०-मेधा श्रीपादु० मृत्यु श्रीपादु०- काली श्रीपादु०- ऊर्ध्वा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

पाद्यादिभिः सम्पूज्य एताः पंचमाऽवरण देवताः साङ्गाः—अभीष्ट सिद्धि मे देहि........पंचमावरणार्चनम् । पंचमावरण देवताभ्यो नमः । पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

षष्ठाऽवरणो चतुःषष्ठि योगिनी पूजनम्—

मूलं १ दक्ष कर्णा श्रीपादु०, २ राक्षसी श्रीपादु०-३ क्षयन्ती श्रीपादु०-४ छाया श्रीपादु०-५क्षणा श्रीपादु० ६पिंगलाक्षी श्रीपादु०- ७ अक्षया श्रीपादु०- ८ क्षया श्री पादु०,९ नाशिनी श्रीपादु०-१०इला श्रीपादु०,११ लीलावती श्रीपादु० १२ लया श्रीपादु० १३ लीला श्रीपादु० १४ लंका श्रीपादु० १५ लंकेश्वरी श्रीपादु० १६ तरसा श्रीपादु० १७ विमला श्रीपादु० १८हुताशनी श्रीपादु १९ विशालाक्षी श्रीपादु० २० हुंकारी श्रीपादु०, २१ वडवामुखी श्रीपादु० २२ महारवा श्रीपादु० २३ महाक्रूरा श्रीपादु०, २४ क्रोधिनी श्रीपादु०, २५ र व

राविनी श्रीपादु०, २६ सर्वंगा श्रीपादु०, २७ तरला श्रीपादु०, २८ तारा श्रीपादु०, २९ ऋग्वेदिनी श्रीपादु०, ३० रौद्री श्रीपादु०,३१ सरसा श्रीपादु,० ३२ रस संग्रहा श्रीपादु०, ३३ शर्वरी श्रीपादु०, ३४ताल-जंघा श्रीपादु०, ३५ रक्ता श्रीपादु०,३६ विद्यु जिह्वा श्रीपादु०, ३७ करंकिणी श्रीपादु०, ३८ मेघनादा श्रीपादु०, ३९ चण्डोग्रा श्रीपादु० ४० कालकर्णा श्रीपादु०, ४१ द्विपानना श्रीपादु०, ४२ पद्मा श्रीपादु० ४३ पद्मावती श्रीपादु ४४ प्रपञ्चज्वलितानना श्रीपादु०, ४५ पिचुवक्त्रा श्रीपादु०, ४६ पिशाची श्रीपादु०, ४७पिसतासी श्रीपादु०, ४८ लोलुपा श्रीपादु०, ४९ पार्वती श्रीपादु०, ५० पावनी श्रीपादु०, ५१ तापिनी श्रीपादु०, ५२ वामनी श्रीपादु०, ५३ विक्रता-शवा श्रीपादु०, ५४ वृहत्कुक्षी श्रीपादु०, ५५ दंष्ट्राली श्रीपादु०, ५६ विश्वरूपा श्रीपादु०, ५७यम जिह्वा श्रीपादु०,५८ जयन्ती श्रीपादु०, ५९ दुर्जया श्रीपादु०,६० यमन्तिका श्रीपादु०, ६१ विडाला श्रीपादु०, ६२रेवती श्रीपादु०, ६३प्रेताशो श्रीपादु०,६४ विजया श्रीपादुकां पूजयामि० ।

षष्ठाऽवरणे महालक्ष्मी मातृका पूजनम् ।

लं मूलं प्रकृति श्रीपादु०, विकृति श्रीपादु०, विद्या श्रीपादु०, भावना श्रीपादु०, वृद्धा श्रीपादु०, विभूति श्रीपादु०, सुरभि श्रीपादु०, वागप्रदा श्रीपादु०, कमलात्मिका श्रीपादु०, पद्मालया श्रीपादु०, शची श्रीपादु०, पद्मा श्रीपादु०, शुद्धि श्रीपादु०, स्वाहा श्रीपादु०, स्वधा श्रीपादु०, धान्या श्रीपादु०, हिरण्या श्रीपादु०, लक्ष्मी श्रीपादु०, अदिति श्रीपादु०, दिति श्रीपादु०, दीप्ता श्रीपादु०, वसुधा श्रीपादु०, करुणा श्रीपादु०, धर्मनिलया श्रीपादु०, पद्माक्षी श्री पादुकां०भूत धारिणी श्रीपादु०, पद्म प्रभा श्रीपादु०, वेद माता श्रीपादु०, पद्महस्ता श्रीपादु०, परमा श्रीपादु०, पद्मोद्भवा श्री पादु०, पद्ममुखी श्रीपादु०, पद्म सुन्दरिका श्रीपादु०, पद्मनाभ प्रिया श्रीपादु०, पद्म गंधिनी श्रीपादु०, पद्मिनी श्रीपादु०, रमा श्रीपादु०, पद्ममाला धरा श्री पादु०, पद्मा श्रीपादु०, सुप्रसन्ना श्रीपादु०, प्रिया श्री पादु०, कमला श्रीपादु०, अनघा श्रीपादु०,-हरिवल्लभा श्रीपादु०,अमोघाश्रीपादु०,अमृता श्रीपादु०दिव्याश्रीपादु० अशोका श्रीपादुकां पू० त० नमस्करोमि–

पाद्यादिभि सम्पूज्य

एताः षष्ठाऽवरण देवताः सांगाः—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि......षष्ठाऽवरणार्चनम्।

षष्ठावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

सप्तमाऽवरण देवताः दश दल पद्मे ।

मूलं लं इन्द्र श्रीपादु०, रं अग्नि श्रीपादु०, यं यम श्रीपादु०, क्षं नैऋतश्रीपादु०, वं वरुण श्रीपादु० यं वायु श्रीपादु०, सं सोमश्रीपादु०, हं ईशान श्रीपादु०, ह्रीं अनन्त श्रीपादु०, ॐ ब्रह्म श्रीपादु–

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः––

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि......सप्तमावरणार्चनम् । सप्तमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

अष्टमाऽवरण देवताः भूपुरे––

मूलं वं वज्र श्रीपादु०-शं शक्ति श्रीपादु०-दं दण्ड श्रीपादु० खं खड्ग श्रीपादु० पां पाश श्रीपादु०-अं अंकुश श्रीपादु०-गं गदा श्रीपादु०-त्रिं त्रिशूल श्रीपादु०-चं चक्र श्रीपादु०-पं पद्म श्रीपादुकां०, विशेष आयुध ।

अक्ष श्रीपादु०, शृंग श्रीपादु०, परशु श्रीपादु०, गदा श्रीपादु०-इषु श्रीपादु०, कुलिष श्रीपादु पद्मश्रीपादु०, धनुः श्रीपादु०, कुण्डिका श्रीपादु०, दण्ड श्रीपादु०, शक्ति श्रीपादु०, असि श्रीपादु०, चर्म श्रीपादु०, शंख श्रीपादु० ।

घण्टा श्रीपादु०, सुराभाजन श्रीपादु०, त्रिशूल श्रीपादु०, पाश श्रोपादु०, सुदर्शन श्रोपादु०, चक्र श्रीपादु०, ।

पाद्यादिभि सम्पूज्यः एताः अष्टमावरण देवताः साङ्गाः। अभीष्ट सिद्धि मे देहि......अष्टमाऽवरणार्चनम् । अष्टमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पांञ्जलिं दद्यात् ।

नवमावरण देवता पूजनम् द्वारपाल,

वं वटुकाय नमः वटुक श्रीपादु०, यां योगिनी श्रीपादु०, क्षं क्षेत्रपाल श्रोपादु०, गं गणपति श्रीपादु०, गं विघ्नाय नमः विघ्न श्रीपादु , अष्टवसु श्रोपादु०, द्वादशादित्य श्रीपादु०, एकादश रुद्र श्रीपादु०, सर्वभूत श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः नवमावरण देवताः साङ्गाः अभीष्ट सिद्धि मे देहि......नवमावरणार्चनम् । नवमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

तत्व मुद्रा से विषेशार्घ्य दे ।

मूलं आत्म तत्व व्यापिका श्रीमहालक्ष्मी चामुण्डा सांगाः। सपरिवारः सायुधाः सशक्तिका तृप्यन्तु ।

मूलं विद्या तत्व व्यापिका श्रीमहालक्ष्मी चामुण्डा साङ्गाः० ।

मूलं—शिव तत्व व्यापिका श्रीमहालक्ष्मी चामुण्डा सांगाः० ।

मूलं सर्वतत्व व्यापिका श्री महालक्ष्मी चामुण्डा सांगाः० ।

यथाशक्ति पूजा पूर्णता के लिए जप करें।

गं विघ्नाय नमः ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै विच्चे । ॐ ह्रीं श्रीं विष्णवे नमः, ॐ ह्रीं वं बटुकाय आपद्धुधारणाय कुरु २ बटुकाय श्रीं । ऐं गुरुवे नमः ।

कृतेनानेन पूजनेन श्री गुरु जगदम्बा महालक्ष्मी प्रसादात् । सर्वं परिपूर्ण मस्तुः फलं दद्यात् । फल चटादे ।

* शुभम् *

महासरस्वती विशेष पीठ पूजा—

ॐ मेधायै नमः । प्रज्ञायै नमः । प्रभायै नमः । विद्यायै नमः । श्रियै नमः । धृत्यै नमः । स्मृत्यै नमः । वृद्धयै नमः । विद्येश्वर्यै नमः । इच्छायै नमः । ज्ञानायै नमः । क्रियायै नमः, काम-कामिन्यै नमः । कामदायै नमः रति प्रियायै नमः, अनन्तायै नमः, मनोन्मनायै नमः, महा सरस्वत्यै नमः, भ्रामर्यै नमः, भीमायै नमः, माहेश्वर्यै नमः, कौमार्यै नमः, वैष्णव्यै नमः, वाराह्यै नमः, नारसिंह्यै नमः, इन्द्राण्यै नमः,चामुण्डायै नमः, कापिन्यै नमः,पालिन्यै नमः, क्लेदिन्यै नमः, धारणायै नमः, क्लेदिन्यै नमः, मालिन्यै नमः, हंसिन्यै नमः, शालिन्यै नमः, सुभगायै नमः, भगायै नमः, भग सर्पण्यै नमः, भगमालिन्यै नमः, अनंग्यै नमः, अनंग कुसुमायै नमः, अनंग रेखायै नमः, अनंग मदनायै नमः, योगिन्यै

नमः, सत्यायै नमः, विमलायै नमः ज्ञानायै नमः, बुद्ध्यै नमः, संस्कृत्यै नमः विश्वायै नमः, प्रकृत्यै नमः वाग्मय्यै नमः सर्व सिद्ध्यै नमः।

श्रुत्यै नमः वागेश्वर्य्यै नमः स्वशक्त्यै नमः धारिण्यै नमः विद्यायै नमः ह्रियै नमः श्रियै नमः पुष्ट्यै नमः सिनीवाल्यै नमः। कुह्वै नमः, रुद्रायै नमः प्रेम्नायै नमः नंदिन्यै नमः पोषण्यै नमः ऋद्ध्यै नमः कालरात्र्यै नमः,महारात्र्यै नमः,भद्रकाल्यै नमः कपर्दिन्यै नमः विकृत्यै नमः दण्डिन्यै नमः मुण्डिन्यै नमः इन्दु खण्डन्यै नमः शिखण्डिन्यै नमः।

निशुम्भ शंभु मर्दिन्यै नमः महिषासुर मर्दिन्यै नमः इन्द्राण्यै नमः रुद्राण्यै नमः शंकरार्धाङ्गशरीरिण्यै नमः नार्य्यै नमः नारायण्यै नमः शूलिन्यै नमः कपालिन्यै नमः अम्बिकायै नमः आह्लादिन्यै नमः।

अथ उत्तम चरित्राऽवरण पूजा-विनियोगः।

अस्य श्री वायव्याऽम्नायात्मिका महासरस्वती चामुण्डा नवार्ण मंत्रस्य रुद्र ऋषिः महा सरस्वती चामुण्डा देवताऽनुष्टुप् छन्दः भीमा चामुण्डा शक्तिः भ्रामरी बीजं विपरीत प्रत्यंगिरा कीलकं सूर्यस्तत्वं

सामवेद स्वरूपिणी श्रीमहासरस्वती प्रसादाऽत्मनोऽभीष्ट फल प्राप्ति हेतवे आवरणार्चने (जपे) विनियोगः।

ॐ हृदयायै नमः, ऐं शिरसे स्वाहा, क्लीं शिखायै वषट् सरस्वत्यै कवचाय हूं विच्चे नेत्र त्रयाय वौषट्।

ॐ ऐं क्लीं सरस्वत्यै विच्चे अस्त्राय फट्। एवं करन्यसं कुर्य्यात्।

ध्यानं—

ॐ घण्टा शूल हलानि शंख मुसले चक्रं धनुः सायकं।
हस्ताब्जै र्दधतीं घनान्त विलसच्छीत्तांशु तुल्य प्रभाम्॥
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगता माधार भूतां महा---
पूर्वामत्र सरस्वती मनु भजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम्॥

उपरोक्त ध्यान विशुद्ध उत्तर, और अनाहद पश्चिम दौने द्वारा बने वायव्य कोण में अर्थात् अधोमुख विशुद्ध चक्र में करे। यह चक्र १४ पत्ते का है रंग मिश्रित है। अधोमुख अनहद में नैऋत कोण बनता है, यह ११ पत्ते का है। रंग अनाहद पश्चिम और मणिपुर दक्षिण दौने के रंग का है। इन दौनों वायव्य और नैऋत आम्नाय की अधिष्ठात्री महा सरस्वती ही है, व्रह्मा भैरव के साथ दौनों चक्रों में इन्हीं ब्रह्मा सरस्वती का ध्यान करें व्रह्मा जी के चार भुजा हैं नाग यज्ञोपवीत है ऐसा ध्यान करे फिर हृदय सिंहासन पर मानसिक पूजा कर वाह्य वायव्य कोणात्मक चक्र एवं नैऋत कोणात्मक चक्र पर क्रमशः स्थापित करे। वाह्य पूजा करें।

महापद्म वनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे ।
सर्व भूतहिते मातरे ह्येहि परमेश्वरि ॥

ॐ ऐं क्लीं सरस्वत्यै विच्चे, ॐ कं ब्रह्मणे नमः वायव्य कोणाधिष्ठात्रि ब्रह्म सहित सरस्वती चामुण्डा इहागच्छत् इह तिष्ठत ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रां ह्लीं क्लीं विच्चे ॐ कं ब्रह्मणे नमः । नैऋत कोणाधिष्ठात्रि ब्रह्म सहित सरस्वती चामुण्डा इहा गच्छत इह तिष्टत । स्वागतं समर्पयामि, आवाहिता भव संस्थापिता भव सन्निरुद्धा भव, सम्मुखी भव, अवगुण्ठिता भव, सकलीकरणं कुर्य्यंत् ।

ॐ हृदयाय नमः हृदय शक्तिः श्रीपादुकां पूजयामि तर्प०, नमस्करोमि ।

ऐं शिर शक्त्यै नमः शिर शक्तिः श्रीपादु०,
क्लीं शिखा शक्त्यै नमः शिखा शक्तिः श्रीपादु०,
सरस्वत्यै कवच शक्त्यै नमः कवच शक्तिः श्रीपादु०,
विच्चे नेत्र शक्त्यै नमः नेत्र शक्तिः श्रीपादु०,
ॐ ऐं क्लीं सरस्वत्यै विच्चे अस्त्र शक्त्यै नमः,

अस्त्र शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि।

परमीकृता भव धेनु योनि मुद्रां प्रदर्श्य।

मूलं–देवेशि भक्त सुलभे, परिवार समन्विते।
यावत्वं पूजयिष्यामि, तावत्वं सुस्थिरा भव॥

यन्त्रोपरि अष्टधा मूल मुच्चार्य प्राण प्रतिष्ठां कुर्य्यात्।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ब्रह्म भैरव सहित सरस्वती चामुण्ड्या प्राणाः इह प्राणः जीवः इह जीवः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, वग् मन स्त्वक् चक्षु श्रोत्र घ्राणः प्राणा इह वागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

वारत्रयं पठेत् ॐ ॐ षोडश वार मुच्चार्य षोडश संस्कारान् सम्पादयामि। चैतन्य मूर्त्तौं परिकल्पयामि

मूलं--आवाहनं समर्पयामि, स्वागतम्,पाद्यं,-अर्घ्यं आचमनीयं, मधुपर्कं, आचमनीयं, स्नानं, वस्त्रं यज्ञोपवीतं, आचमनीयं, गंधं, अक्षतं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, आचमनीयं, ताम्बूलं पूगीफलं दक्षिणां समर्पयामि। आरात्तिकं, पुष्पाञ्जलिं प्रदक्षिणां प्रणामं समर्पयामि---

ॐ संविन्मयि परे देवि, परामृत रसप्रिये।
अनुज्ञां देहि देवेशि, परिवारार्चनाय मे ॥

मूलं छिन्नमस्ता श्रीपादुकां०, विपरीत प्रत्यं-गिरा श्रीपादु०, भद्रकाली श्रीपादु०, चण्ड मातङ्गी श्रीपादु०, मोहिनो मातङ्गी श्रीपादु० तारा श्रीपादु०, चामुण्डा श्रीपादु०, भद्रकाली श्रीपादु०, भ्रामरी श्री पादु०, भोमा श्रीपादु०, माहेश्वरी श्रीपादु०, कौमारी श्रीपादु०, वैष्णवी श्रीपादु०, वाराही श्रीपादु०, नारसिंहीं श्रीपादु०, इन्द्राणि श्रोपादु०।

मूलं मध्ये वायव्याम्नायधिष्ठात्रि ब्रह्मा सहित सरस्वतो चामुण्डा श्रीपादु०। मध्ये नैऋत्याम्नाय-धिष्ठात्रि ब्रह्मा सहित सरस्वती चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः--अभीष्ट सिद्धि मे देहि...प्रथमावरणार्चनम्।
प्रथमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।
द्वितीयावरण पूजा अष्ट दले।

मूलं व्यापिनी श्रीपादु०, पालिनी श्रीपादु०,पावनी श्रोपादु०, क्लेदिनी श्रोपादु०, धारिणी श्रीपादु०,

मालिनी श्रीपादु०,हंसनी श्रीपादु०,शालिनी श्रीपादुका०, दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ, गुरु त्रय श्रीपूज०, गुरु-परमगुरु, परमेष्टि, परात्पर--गुरु,चतुष्टय---श्रीपादु०-

पाद्यादिभि सम्पूज्य एता: द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः—अभीष्ट सिद्धि मे देहि......द्वितीयावरणार्चनम् । द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

तृतीयावरण पूजा अष्ट दले ।

मूलं सुभगा श्रीपादु०, भगा श्रीपादु०, भग सर्पणी श्रीपादु०, भग मालिनी श्रीपादु०, अनंगा श्रीपादु०, अनंग कुसुमा श्रीपादु०, अनंग रेखा श्रीपादु०, अनंग मदना श्रीपादु० ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः---अभीष्ट सिद्धि मे देहि........तृतीयावरणार्चनम् ।

तृतीयावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

चतुर्थावरण पूजा अष्ट दल पद्मे ।

मूलं योगा श्रीपादु०, सत्या श्रीपादु०, विमला श्रीपादु०, ज्ञाना श्रीपादु०, बुद्धि श्रीपादु०, स्मृति श्री पादु०, मेधा श्रीपादु०, प्रज्ञा श्रीपादु० ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः चतुर्थावरण देवताः साङ्गाः---अभीष्ट सिद्धि मे देहि...चतुर्थावरणार्चनम् ।

चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि दद्यात् ।

पंचमावरण पूजा चतुर्दश दल पद्मे ।

मूलं संस्कृति श्रीपादु०, वैश्रवा श्रीपादु०, प्रकृति श्रीपादु०, वाग्मयी श्रीपादु०, सिद्धिदा श्रीपादु०, प्रज्ञा श्रीपादु०, मेधा श्रीपादु०, श्रुति श्रीपादु०, स्मृति श्रीपादु०, वागेश्वरी श्रीपादु०, स्वस्ति श्रीपादु०,शक्ति श्रीपादु०, स्मृति श्रीपादु०, धारिणी श्रीपादु० ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य, एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः---अभीष्ट सिद्धि मे देहि...पंचमावरणार्चनम् । पंचमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि दद्यात् ।

षष्ठावरणो चतः षष्ठि योगिनी पूजनम् । चतुः षष्ठि दल पद्मे,

मूलं---१ विशालाभि श्रीपादु०, २समृद्धि श्रीपादु० ३ वृद्धि श्रीपादु०, ४ श्रृद्धा श्रीपादु०, ५ स्वाहा श्री

वायव्य नैऋत दोनों नवार्णों को मूल मंत्र में साथ-साथ बोलना चाहिए । उत्तम चरित्र के दो नवार्ण हैं। एक वायव्याम्नाय एक—नैऋत्याम्नाय का—

पादु०, ६ स्वधा श्रीपादु०, ७ भिक्षा श्रीपादु०, ८ माया श्रीपादु०, ९ संज्ञा श्रीपादु०, १० वसुन्धरा श्री पादु०, ११ त्र्यैलोक्य धात्री श्रीपादु०, १२ सावित्री श्रीपादु०, १३ गायत्री श्रीपादु०, १४ त्रिपदेश्वरी श्री पादु०, १५ स्वरूपा श्रीपादु०, १६ वहुरूपा श्रीपादु०, १७ स्कन्धमाता श्रीपादु०, १८ अच्युता श्रीपादु०, १९ प्रिया श्रीपादु०, २० विमला श्रीपादु०, २१ कमला श्रीपादु०, २२ दारुणी श्रीपादु०, २३ हारुणी श्रीपादु०, २४ प्रकति श्रीपादु०, २५ सृष्टि श्रीपादु०, २६ स्थिति श्रीपादु०,२७ संहृति श्रीपादु०,२८संधि श्री पादु०,२९ मातः श्रीपादु०,३० सती श्रीपादु०,३१ हंसी श्रीपादु०,३२मुक्ता (मदा)श्रीपादु० ३३वर्जिता श्रीपादु० ३४परा श्रीपादु०, ३५ देवमाता श्रीपादु०, ३६ देवकी श्रीपादु०, ३७ भगवति पू० ए० ३८कमलालया श्रीपादु०, ३९त्रिमुखी श्रीपादु०,४० सप्तमुखी श्रीपादु०, ४१सुरा-सुर मर्दिनी श्रीपादु०, ४२ लम्बोष्ठी श्रीपादु०,४३उर्ध्व केशी श्रीपादु० ४४ वहुशिरा श्रीपादु० ४५ कृशोदरी श्रीपादु०, ४६ रथ रेखा श्रीपादु०, ४७ शशिरेखा श्री पादु०,४८गगन वेगा श्रीपादु०, ४९पवन वेगा श्रीपादु०, ५० भुवन पाला श्रीपादु०, ५१ मदनातुरा श्रीपादु०, ५२ अनंगा श्रीपादु०, ५३ अनंग मदना श्रीपादु०, ५४

अनंग मेखला श्रीपादु०, ५५ अनंग कुसुमा श्रीपादु०, ५६ विश्वरूपे श्रीपादु०, ५७ असुर भयंकरी श्रीपादु०, ५८ अक्षोभ्य श्रीपादु०, ५९ सत्यवादिनी श्रीपादु०, ६० वज्ररूपे श्रीपादु०, ६१ वज्ररेखा श्रीपादु०, ६२ शुचि-व्रता श्रीपादु०, ६३ वरदा श्रीपादु०, ६४ वागेशी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

सरस्वतो मातृका--

मूलं १ सरस्वती श्रीपादु०, मंत्र शक्ति श्रीपादु०, वेदमातः श्रीपादु०, जगन्मयी श्रीपादु०,मानसी श्रीपादु० हंसगा श्रीपादु०, हंसी श्रीपादु०, सर्गा श्रीपादु०, क्षेम-कारिणी श्रीपादु०, अक्षया श्रीपादु०, विजया श्रीपादु०, प्रीतिः श्रीपादु०, लोमश श्रीपादु०, लोम हारिणो श्री-पादु०, विज्ञान देहा श्रीपादु०, सन्मूढा श्रीपादु०, कामदा श्रीपादु०, कामिनी श्रीपादु०, कान्ता श्रीपादु०

---

१ आवरणों में एक नाम कई बार आता है उस में शंका नहीं करना चाहिये. वैदिक कर्म काण्ड में गणपति पूजन के बाद षोडस मातृका में भी गणपति पूजा होती विनायकादि पंच लोक पालों में भी चतुर्लिग तो भद्रा में भी एक ही यज्ञ मण्डप पर कई बार गणपति पूजा होती है इसी प्रकार तंत्र में भी कई बार एक ही देवता का नाम आता है, मण्डल संघ से ।

परमेष्टी श्रीपादु०, नरोत्तमा श्रीपादु०, पुष्पानुवंधा श्री पादु०, श्रेयस्करी श्रीपादु०, दयासार श्रीपादु०, अनुकम्पा श्रीपादु०, चतुःस्तना श्रीपादु०, पञ्चयज्ञा श्री पादु०,सुरभिः श्रीपादु०, सुरपूजिता श्रीपादु०, विश्वास जीविनी श्रीपादु०, विश्वा श्रीपादु०, कामधेनु श्रीपादु० सर्वकामदा श्रीपादु०, अविद्या श्रीपादु०, दुहितृ श्रीपादु० कपिला श्रीपादु०, मलवर्जिता श्रीपादु०, सुशीला श्री पादु०, जीववत्सा श्रीपादु०,शीलवत्सा श्रीपादु०सुवत्सला श्रीपादु०, नंदिनी श्रीपादु०, जयदा श्रीपादु०, अजेया श्रीपादु०, दुर्जयाश्रीपादु०, दुखः हारिणी श्रीपादु०, स्वस्तिदा श्रीपादु०, स्वस्तिकृता श्रीपादु०, स्वस्ति स्वरूपा श्रीपादु०-स्वस्ति दक्षिणा श्रीपादु० ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य, एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गाः—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि......षष्ठावरणार्चनम् ।
षष्ठावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।
सप्तमावरण पूजनम् ।

मूलं लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्रीपादुकां, रं अग्नि श्री पादु०- यं यम श्रीपादु०- क्षं नैऋति श्रीपादु०- वं वरुण श्रीपादु०, यं वायु श्रीपादु०, सं सोम श्रीपादु०, हं ईशान श्रीपादु०, ह्रीं अनन्त श्रीपादु०- अं ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि० ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः--अभीष्ट सिद्धि मे देहि...सप्तमा वरणा-र्चनम् ।

सप्तमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

अष्टमावरण देवता पूजा

मूलं वं वज्र श्रीपादु०, शं शक्ति ,श्रीपादु०, दं दण्ड श्रीपादु०, खं खड्ग श्रीपादु०, पां पाश श्रीपादु०, अं अंकुश श्रीपादु०, गं गदा श्रीपादु०, त्रिं त्रिशूल श्रीपादु०, चं चक्र श्रीपादु०, पं पद्म श्रीपादु०,, विशेष आयुध-घंटा श्रीपादु०, शूल श्रीपादु०, हल श्रीपादु०, शंख श्रीपादु०, मुसल श्रीपादु०, चक्र श्रीपादु०, धनुष श्रीपादु०, सायक श्रीपादुकां पूजयामि० ।

पाद्यादिभिः सम्पूज्य एताः अष्टमावरण देवताः साङ्गाः--

अभीष्ट सिद्धि मे देहि......अष्टमावरणार्चनम् ।

अष्टमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

नवमावरण देवताः पूजा (द्वारपाल) ।

मूलं - वं वटुक श्रीपादु०, यां योगिनी श्रीपादु०, क्षं क्षेत्रपाल श्रीपादु०, गं गणपति श्रीपादु०, गं विघ्नाय नमः आम्नायेश्वर गणपति श्रीपादुकां० अष्टवसु श्री पादु०, द्वादशादित्य श्रीपादु०, एकादश रुद्रः श्रीपादु०, सर्वभूत श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य, एताः नवमावरण देवताः साङ्गाः—

अभीष्ट सिद्धि मे देहि......नवमाबरणार्चनम् ।

नवमावरण देवताभ्यो नमः फलं समर्पयामि ।

आत्म तत्व, विद्या तत्व, शिव तत्व, सर्व तत्व व्यापिका महालक्ष्मी चामुण्डा साङ्गाः तृप्यन्तु ।

कृतेनानेन पूजनेन श्रीगुरु जगदम्बा सरस्वती चामुण्डा प्रसादात् सर्वं परिपूर्ण मस्तु । यथा शक्ति जपं कुर्य्यात् । गं विघ्नाय नमः ।

फल चटावै ।

ॐ ऐं क्लीं सरस्वत्यै विच्चे । कं ब्रह्मणे नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं क्रीं ह्लीं क्लीं विच्चे, कं ब्रह्मणे नमः ।

वटुक मंत्र० ऐं गुरुवे नमः ।

नैऋत आम्नाय की समष्टि वायव्याम्नाय में ही होती है। वायव्य में ही इस की पूजा होती है।

* शुभम् *

१ –भूलं जहां पर आया है वहाँ पर काली पूजा में काली नवार्ण फिर रुद्र भैरव मंत्र बोलना चाहिये। इसीप्रकार महालक्ष्मी आवरण पूजा में लक्ष्मी नवार्ण एवं बिष्णु मंत्र प्रत्येक आवरण देवता के आदि में लगाने से ही आवरण पूजा होगी। इसी प्रकार सरस्वती त्रिशक्ति चामुण्डा में भी उन्हें शिव शक्त्यात्मक मंत्र लगाने चाहिये। यहाँ शक्ति प्रधान होने से शक्ति मंत्र पहले लगेगा।

अथात सं प्रवक्ष्यामि पश्चिमाम्नाय सिद्धिदा ।
गं विघ्नाय नमः प्रोक्तो मन्त्र एव षडाक्षरः ॥

ध्यानं...

पाशांकुशै कल्प लतां विषाणं ।
दधत स तुण्डाहित वीज पूरः ॥
रक्तस्त्रिनेत्र स्तरुणेन्दु मौलि ।
हारोज्ज्वलो हस्ति मुखोऽवताद्वः ॥
ॐ एं गुरुवे नमः ।

पूजा के बाद फल चटाने से देवता सुफलदाता बन जाता है।

समष्टि चण्डिका विशेष पीठ पूजा—

माण्डूकादि परमात्मने नमः कांची पीठाय नमः उजवयिनी पीठाय नमः अयोध्या पीठाय नमः काम कोटि पीठाय नमः समष्टि त्रिशक्ति चामुण्डा पीठाय नमः महाकाल्यै नमः, महा सरस्वत्यै नमः, महालक्ष्म्यै नमः, गणपतये नमः, वटुकाय नमः, क्षेत्रपालाय नमः, योगिन्यै नमः, सर्व विघ्नकृताभ्यो नमः, सर्वभूतेभ्यो नमः, उद्यान पीठ उद्यानेश्वर उद्यान पादुकाय नमः, मातृका पीठ मातृकेश्वर मातृका पादुकाय नमः, जालंधर पीठ ज्वाला मुखेश्वर ज्वालामुखी पादुकाय नमः, कोलगिरि पीठ कोल गिरीश्वर कोलगिरी पादुकाय नमः पूर्णगिरि पीठ पूर्णेश्वर पूर्णेश्वर पादुकाय नमः, संहारगिरि पीठ संहारेश्वर संहारेश्वर पादुकाय नमः,

द्रोणगिरि पीठ द्रोणेश्वर द्रोणेश्वर पादुकाय नमः ।

कामरूप पीठ कामेश्वर कामेश्वर पादुकाय नमः ।

चतुष्कोणेषु--अग्न्यादिषु---वेतालाय नमः, ब्राह्मै नमः, माहेश्वर्यै नमः,कौमार्यै वैष्णव्यै नमः,वाराह्यै नमः, इन्द्राण्यै नमः, चामुण्डायै नमः, चण्डिकायै नमः असितांगादि अष्ट भैरवेभ्यः नमः, इन्द्रादि दश दिक् पालेभ्यः नमः, वज्रादि आयुधेभ्यः नमः, द्वारपालय नमः, गुरू परमगुरु परमेष्टि परात्पर गुरुवे नमः, गणेशाय नमः, हरि हराय नमः, महाकाली गौरी सहित रुद्राय नमः, महालक्ष्मी सहित हृषिकेशाय नमः, महा सरस्वती वागीश्वर सहित ब्रह्मणे नमः, कालाय नमः, रुद्राय नमः सिंहाय नमः, मृत्युवे नमः, विजयाय नमः, विघ्नेश्वराय नमः, महिषाय नमः, चण्डिकायै नमः, ओंकार पीठाय नमः, जलंधर पीठाय नमः, पूर्णगिरि पीठाय नमः, कामरूप पीठाय नमः, जयायै नमः, नमः, विजयायै नमः, जयन्त्यै नमः, अपराजितायै नमः, विश्व मायादि चतुर्विशति शक्तिभ्यो नमः, त्रिशक्ति चामुण्डा पीठाय नमः।

अथ त्रिशक्ति चामुण्डा (समष्टि) पूजनम् ।

अस्य श्रीत्रिशक्ति चामुण्डा नवार्ण मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु रुद्राः भीषण भैरव ऋषयः गायत्र्युष्टुगनुष्टुभ पूच्छन्दांसि ईशान आम्नाय नायिका श्रीमहाकाली, आग्नेयाम्नाय नायिका श्री महालक्ष्मी वायव्य नैऋत आम्नाय नायिका श्री महा सरस्वती चतुः कोणाम्नाय

इस प्रकार न्यास कर निम्नलिखित श्लोकों द्वारा त्रिशक्ति चामुण्डा का विशुद्ध और आज्ञा चक्र के मध्य में ६४ पत्ते वाले ललना चक्र में महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती तीन मुख वाली २४ हाथ वाली एक ही मिली हुई मूर्त्ति का ध्यान कर प्राण प्रतिष्ठा कर मानसिक पूजा कर भीषण भैरव के साथ हृत्कमल से नासा द्वारा प्राण पर विठाकर बाहर ला यंत्र पर विराजमान करे। त्रिशक्ति चामुण्डा की सृष्टि, स्थिति, लय, अनाख्या, भासा, प्रायः सभी ध्यान मिलते हैं तथा सृष्ट्यादि क्रम से नवार्ण मंत्र जप प्रक्रिया भी गुरुजनों को प्राप्त है उनसे पूर्ण विधान जानकर सिद्धता प्राप्त करें।

नायिका त्रिशक्ति चामुण्डा देवता नन्दा शाकम्भरी भीमाः शक्तयः रक्त दन्तिका, दुर्गा, भ्रामर्यो वीजानि पंच वक्त्रा महाकाली वगला विपरीत प्रत्यङ्गिरा कीलकं अग्नि वायु सूर्य्य स्तत्वानि ऋग्यजुः सामवेदाः ध्यानानि श्री महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती त्रि-शक्ति चामुण्डा समष्टि प्रीत्यार्थं मम सर्वाभीष्ट सिद्ध-घर्थ आवरण पूजने (जपे) विनियोगः ।

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः) ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा) ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्) ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः (नेत्राभ्यां वौषट्) ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल कर पृष्टाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्) ।

अथ ध्यानम्—

शंखं चक्रं गदां वाणान्पाशं परिघ शूलके ।
भुशुण्डीं च शिरः खड्गं दधतीं दश वक्त्रकाम् ।।१।।

तामसीं सिद्धिदां नौमि महाकालीं दशांघ्रिकाम् ।
माला च परशुं वाणान् गदां कुलिश मेव च ।।२।।

पद्मं धनुः कुण्डिकां च दंडं शक्ति मसिं तथा ।
खेटकं जलजं घंटां सुरापात्रं च शूलकम् ।।३।।

पाशं सुदर्शनं चैव दधतीं लोहित प्रभाम् ।
पद्म स्थितां महालक्ष्मीं भजे महिष मर्दिनीम् ॥४॥

घण्टां शूलं हलं शंख मुसलाषि धनुः शरान् ।
दधती मुज्वलां नौमि देवी गौरीं समुद्भवाम् ॥५॥

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे, ॐ ह्रीं महाकालेश्वराय विच्चे खड्गं चक्र अक्षस्रग् घंटाशूल मित्यादि क्रमेण ध्यात्वा ।

प्रार्थयेत्--

महापद्म वनान्तस्थे कारणा नंद विग्रहे ।
सर्वभूत हिते मातरेहि ह्येहि परमेश्वरि ॥

भीषण भैरव सहित त्रिशक्ति चामुण्डा इहागच्छत इह तिष्ठत् स्वागतं समर्पयामि,आवाहिता भव, संस्थापिता भव, सन्नरुद्धा भव, सम्मुखी भव, अवगुण्ठिता भव, सन्निरुद्धा भव, सकलीकरणं कुर्य्यात् ।

ऐं हृच्छक्त्यै नमः हृदय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पं० नमस्करोमि ।

ह्रीं शिरः शक्त्यै नमः, शिर श्रीपादुकां पूजयामि०
क्लीं शिखा शक्त्यै नमः शिखा श्रीपादुकां पूजयामि०

चामुण्डायै कवच शक्त्यै नमः कवच श्रीपादुकां०,

विच्चे नेत्र शक्त्यै नमः, नेत्र श्रोपादुं०,

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे—अस्त्र शक्त्यै नमः अस्त्र श्रीपादुकां—परमीकृता भव, धेनु योनि मुद्रां प्रदर्श्य ।

प्रार्थना—देवेशि भक्त सुलभे परिवार समन्विते ।
यावत्वं पूजयिष्यामि, तावत्वं सुस्थिरा भव ।

यंत्रोपरि मूल मंत्र अष्टधा मुच्चार्य प्राण प्रतिष्ठां कुर्य्यात् ।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं भीषण भैरव सहिताय त्रिशक्ति चामुण्ड्या प्राणाः इह प्राणाः जीव इह जीवः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षु श्रोत्रः जिह्वा घ्राणः प्राण इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहाः । ॐ ॐ षोडश वारं मुच्चार्य षोडस संस्कारान् सम्पादयामि, चैतन्य मूर्त्तीं परिकल्पयामि ।

मूलं स्वागतं समर्पयामि पुष्पासनं, पाद्यं अर्घ्यं, आचमनं मधुपर्कं, शुद्धाचमनीयं, स्नानं सुगन्धि तैलं

---

० ये चण्डिका के गुरु परम्परा के दिव्य सिद्ध मानव गुरु है कोणाम्नाय गुरु मण्डल अन्य है ।

पंचामृत स्नानं उद्वर्तनं, वस्त्रं यज्ञोपवीतं, आभरणं, अधिरोहणं, गंधं सिन्दूरं कुंकुमं हरिद्रा चूर्णं कज्जलं, इत्रं, अक्षतं, पुष्पं, बिल्व पत्रं दूर्वादलं, पुष्पमालां, फलमालां धूपं दीपं नैवेद्यं आचमनीयं फलं, तांबूलं पूंगीफलं दक्षिणां आरार्त्तिक्यं, पञ्च पुष्पाञ्जलिं, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

ॐ सं विन्मयि परे देवि परामृत रस प्रिये।
अनुज्ञां चण्डिके देहि परिवारार्चनाय मे॥

आदौ वायव्यादीश पर्य्यन्तं गुरु पंक्ति प्रपूजयेत्। ॐमहादेव्यांबा श्रीपादु०, ॐमहादेवा नन्दनाथ श्रीपादु०, ॐत्रिपुराम्बा श्रीपादु०, ॐ भैरवानंद नाथ श्रीपादु०, एते दिव्यौघाः। ॐ ब्रह्मानन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ पूर्ण देवा-नंदनाथ श्रीपादु०, ॐ चलचित्ता नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ स्मरदीपा नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ मायाम्बा नन्द नाथ श्रीपादु० ॐ मायावत्यम्बा नाथ श्रीपादु०, एते सिद्धौघाः। ॐ विमलानन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ भीमसेना नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ सुधाकरानन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ मीना नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ गोरक्षका नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ भोजदेवा नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ प्रजापत्या नन्द

पुष्पाञ्जलि में वौसट् बोला जाता है। पंच पुष्पाञ्जलि होती है।

नाथ श्रीपादु०, ॐ मूलदेवा नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ रतिदेवा नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ विघ्नदेवा नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ हुताशना नन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ समयानन्द नाथ श्रीपादु०, ॐ संतोषानन्द नाथ श्रीपादु०, एते मानवौघाः ।

गुरुपात्रा मृतेन तत्व मुद्रया त्रिः संतर्प्य ।

गुरुपात्र के अमृत से तत्व मुद्रा द्वारा तीन बार वा एक बार तर्पण करे ।

गुरु पादुका मुच्चार्य ।

स्वगुरु श्रीअमुकानन्द नाथ श्री अमुकी देव्याम्बा श्रीपादुकां०, परमगुरु श्रीअमुकानन्द नाथ श्री अमुकी देव्याम्बा श्रीपादुका०, परमेष्टि गुरुनाथ श्रीपादुका०, ॐ परात्पर गुरुनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि । गुरु चतुष्टय पूर्व वत्पूजयेत्तर्पयेच्च ॥

३ मध्ये विन्दु-ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । त्रिशक्ति चामुण्डा पूज०, ॐ ह्लीं महाकालेश्वराय विच्चे ।। भीषण भैरव श्रोपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एता: प्रथमावरण देवता: साङ्गा:--अभीष्ट सिद्धि मे देहि......प्रथमावरणार्चनम् ।

प्रथमावरण देवताभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

द्वितीयावरण देवता पूजा० त्रिकोणे

मूलं सरस्वती ब्रह्मभ्या नमः सरस्वतो ब्रह्म श्री पादुकां०.

लक्ष्मी हृषिकेश श्रीपादु०, गौरी रुद्र श्रीपादु०, सिंह श्रीपादु०, महिष श्रीपादु०, काल श्रीपादु०, मृत्यु श्रीपादु० ।

पाद्यादिभि सम्पूज्यः एता: द्वितीयावरण देवता: साङ्गा:--अभीष्ट सिद्धि मे देहि......द्वितीयावरणार्चनम् ।

द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

तृतीयावरण देवता पूजा षट्कोणे ।

१—गुरु पूजा प्रथमावरण में भी होती है। मध्य और अन्त में भी होती है। अन्त में गुरु स्तव आदि का पाठ करने से पूजा की पूर्णता हो जाती है। दीक्षा और अभिषेक जैसा है, साधक वैसे ही गुरु पूजा करता है। और करनी चाहिये।

मूलं–नन्दजा शक्ति श्रीपादु॰, रक्तदन्तिका शक्ति श्रीपादु॰, शाकम्भरी शक्ति श्रीपादु॰, दुर्गा शक्ति श्री पादु॰, भीमाशक्ति श्रीपादु॰, भ्रामरी शक्ति श्रीपादु॰,

पाद्यादिभि सम्पूज्य, एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः---अभीष्ट सिद्धि मे देहि...तृतीयावरणार्चनम् ।

चतुर्थावरण पूजा अष्ट दले ।

मूलं ब्राह्मी श्रीपादु॰, नारायणी श्रीपादु॰, माहेश्वरी श्रीपादु॰, चामुण्डा श्रीपादु॰, कौमारी श्रीपादु॰ अपराजिता श्रीपादु॰, वाराही श्रीपादु॰, नारसिंही श्रीपादुका॰ ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य, एताः चतुर्थावरण देवताः साङ्गाः—अभीष्ट सिद्धि मे देहि...चतुर्थावरणार्चनम् ।

चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

पंचमावरण पूजा अष्टदले पद्मे ।

मूलं--असिताङ्ग भैरव श्रीपादु॰, रुरु भैरव श्री पादु॰, चण्ड भैरव श्रीपादु॰, क्रोध भैरव श्रीपादु॰,

---

अष्ट भैरवों में ही भीषण भैरव है जो त्रिशक्ति चामुण्डा का भैरव है। भैरव पत्नी को कहते हैं। वटुक सभी का एक ही है। क्षेत्रपाल अलग होते हैं, भैरव वटुक क्षेत्रपाल तीनों पृथक-पृथक हैं।

उन्मत्त भैरव श्रीपादु०, कपाल भैरव श्रीपादु०, भीषण भैरव श्रीपादु०, संहार भैरव श्रीपादु०,योगिनी पात्रा-भृतेन सकृद्वा तर्पयेत्० ।

षष्ठावरणो पूर्वादि अग्नेयान्त चतुर्विंशति दले सम्पूज्य ।

मूलं १—विं विष्णुमाया श्रीपादु०, २चें चेतना श्रीपादु०, ३ बुं बुद्धि श्रीपादु०, ४ निं निद्रा श्रीपादु०, ५ क्षुं सुधा श्रीपादु०, ६ छां छाया श्रीपादु०, ७शक्ति श्रीपादु०, ८ तृं तृष्णायं श्रीपादु०, ९ क्षां क्षान्ति श्रीपादु०,१० जां जाति श्रीपादु०,११लं लज्जा श्रीपादु०, १२ शं शान्ति श्रीपादु०, १३ श्रृं श्रद्धा श्रीपादु०, १४ कां कान्ति श्रीपादु० १५ लं लक्ष्मी श्रीपादु०, १६ धृं धृति श्रीपादु०, १७ वृं वृत्ति श्रीपादु०, १८ श्रुं श्रुति श्रीपादु०, १९ स्मृ स्मृति श्रीपादु०, २० तुं तुष्टि श्रीपादुकां०, २१ पुं पुष्टि श्रीपादु०, २२ दं दया श्रीपादु०, २३ मां मातृ श्रीपादु०, २४ भ्रां भ्रांति श्रीपादु० ।

षष्ठावरणे चतुषष्ठि योगिनी पूजनम् ।

मूलं--१ दिव्य योगिनी श्रीपादु०, २ महायोगिनी

श्रीपादु०, ३ सिद्ध योगिनो श्रीपादु०, ४ माहेश्वरि श्रीपादु०, ५ प्रेताक्षी श्रीपादु०, ६ डाकिनी श्रीपादु०, ७ काली श्रीपादु०, ८ कालरात्री श्रीपादु०, ९ निशाकरी श्रीपादु०, १० हुंकारी श्रीपादु०,११ सिद्धि वेतलनी श्रीपादु०,१२ह्रीं कारी श्रीपादु०,१३भूतडामरी श्री पादु०,१४ऊर्ध्व केशी श्रीपादु०,१५विरुपाक्षी श्रीपादु०, १६ शुष्काङ्गी श्रीपादु०, १७ नरभोजनी श्रीपादु०, १८ फूत्कारी श्रीपादु० १९ वीरभद्रा श्रीपादु०, २० धूम्राक्षी श्रीपादु०, २१ कलहप्रिया श्रीपादु०, २२ राक्षसी श्रीपादु०, २३ घोरराक्षसी श्रीपादु०, २४ विशालाक्षी श्रीपादु०, २५ कौमारी श्रीपादु०, २६ चण्डी श्रीपादु० २७ वाराही श्रीपादु०, २८ मुण्डधारिणी श्रीपादु०, २९ भैरवी श्रीपादु०, ३० वीरा श्रीपादु०, ३१ भयङ्करी श्रीपादु०, ३२ वज्र धारिणी श्रीपादु०, ३३ क्रोधा श्रीपादु०,३४ दुर्मुखी श्रीपादु०, ३५ प्रेतवाहिनी श्रीपादु०,३६ करका श्रीपादु०,३७ दीर्घ लम्बोष्ट्री श्री पादुकां३८मालिनी श्रीपादु०,३९मन्त्र योगिनी श्रीपादु० ४०कालाग्नि श्रीपादु०,४१ मोहिनी श्रीपादु०,४२ चक्रा श्रीपादु०,४३कुण्डलिनी श्रीपादु०, ४४ वालुका श्रीपादु० ४५ कौवेरी श्रीपादु०, ४६ यमदूती श्रीपादु०, ४७

करालिनी श्रीपादु०,४८कौशकी श्रोपादु०, ४६ यक्षिणो श्रीपादु०, ५० भक्षिणी श्रीपादु०,५१ कौवेरी श्रीपादु० ५२ मंत्र वाहिनो श्रीपादु०, ५३ विशाला श्रीपादु०, ५४ कार्मुकी श्रोपादु० ५५ व्याघ्री श्रीपादु० ५६ महाराक्षसी श्रीपादु० ५७ प्रेत भक्षिणी श्रीपादु० ५८ धूर्जटी श्रीपादु०, ५६ विकटा श्रीपादु०, ६० घोररुया श्रीपादु०, ६१ कपालिका श्रीपादु०, ६२ निकला श्रीपादु०,६३ अमला श्रीपादु०,६४ सिद्धिप्रदा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि ।

षष्ठावरणे चण्डिका मातृका सम्पूज्य ।

मूलं—चामुण्डा श्रीपादु०, चण्डिका श्रीपादु०, चण्डा श्रीपादु०, चण्ड मुण्ड विनाशिनी श्रीपादु०, नारायणी श्रीपादु०, भद्रकाली श्रीपादु०, विरजा श्रीपादु०, विश्व मातृका श्रीपादु०, अजिता श्रीपादु०, भार्गवो श्रीपादु०,सौम्या श्रीपादु०,दुर्गा श्रीपादु० दुर्गति नाशिनी श्रीपादु०,अध्यासनी श्रीपादु०चन्द्रघण्टा श्रीपादु०कमला श्रीपादु०, खड्गिनी श्रीपादु०, गदनी श्रीपादु०, घण्टिका श्रीपादु०, परा श्रीपादु०, चरित्रा श्रीपादु०, क्षत्रिणी श्रीपादु, जङ्घा श्रीपादु०, झंकारी श्रीपादु०, जयदा

श्रीपाद॰,टंका श्रीपाद॰,ठङ्कारी श्रीपाद॰,डामरी श्री॰, टंकिका श्रीपाद॰, शिवा श्रीपाद॰, तमोपहन्त्री श्री पाद॰, स्थानेश्वरी श्रीपाद॰, दयारूपा श्रीपाद॰, धन प्रदा श्रीपाद॰, नव्या श्रीपाद॰, परा श्रीपाद॰, फट्-कारी श्रीपाद॰, वन्धिनी श्रीपाद॰, भय वर्जिता श्री पाद॰, महामाया श्रीपाद॰,योगाशी श्रीपाद॰, रंकिणी श्रीपाद॰, लम्बकेशिनी श्रीपाद॰, वरदा श्रीपादु॰, शाकिनी श्रीपाद॰, पण्डा श्रीपाद॰, सर्वेशी श्रीपाद॰, हलिनी श्रीपाद॰, ललिता श्रीपाद॰, क्षामोदरी श्री पाद॰, ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गाः—अभीष्ट सिद्धि मे देहि...... षष्ठावरणार्चनम् ।

षष्ठावरणा देवताभ्यो नमः, पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

सप्तमावरणे (भूपुर मध्ये) पूर्वादि दिक्षु ।

मूलं लं इन्द्र श्रीपादु॰, रं अग्नि श्रीपादु॰, मं यम श्रीपादु॰, क्षं निऋति श्रीपादु॰, वं वरुण श्रीपादु॰, यं वायु श्रीपादु॰, सं सोम श्रीपादु॰, ॐ हं ईशान श्री पादु॰, ह्रीं अनन्त श्रीपादु॰, ॐ ब्रह्मणे श्रीपादुकां पूजयामि॰ ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य–एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः—अभीष्ट सिद्धि मे देहि......सप्तमावरणा-र्चनम् ।

सप्तमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि दद्यात् ।

भूपुर वाह्ये पूर्वादि दिक्षु अष्टमावरण पूजा-

ॐ मूलं वं वज्र श्रीपादु॰, शं शक्ति श्रीपादु॰, दं दण्ड श्रीपादु॰, खं खडग श्रीपादु॰, पां पाश श्रीपादु॰, अं अंकुश श्रीपादु॰, गं गदा श्रीपादु॰, त्रिं त्रिशूल श्री पादु॰, चं चक्र श्रीपादु॰, पं पद्म श्रीपादु॰, ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य, एताः अष्टमावरण देवताः साङ्गाः–अभीष्ट सिद्धि मे देहि........अष्टमावरणा र्चनम् ।

अष्टमावरण देवताभ्यो नमः पुष्पाञ्जलि दद्यात् ।

नवमावरण पूजा—

मूलं–वृं व्रह्म श्रीपादु॰, विं विष्णु श्रीपादु॰, रूं रुद्रः श्रीपादु॰,

---

१ इन्द्रादि दश दिकपालों का दशदल में व भूपुर मध्य में भी पूजा होती है ।

दक्षिण हस्ते—१ खड्ग श्रीपादु॰,२ चक्र श्रीपादु॰, ३ गदा श्रीपादु॰, ४ वाण श्रीपादु॰, ५ शूल श्रीपादु॰, ६ परशु श्रीपादु॰, ७ वज्र श्रीपादु॰, ८ पद्म श्रीपादु॰, ९ दण्ड श्रीपादु॰, १० मूसल श्रीपादु॰, ११ अभय श्री पादु॰, १२ पाश श्रीपादु॰, ।

वाम हस्ते—१ शंख श्रीपादु॰, २ धनुष श्रीपादु॰, ३ परिध श्रीपादु॰, ४ भुषुंडी श्रीपादु॰ ५ कमण्डलु श्रीपादु॰, ६ अक्षमाला श्रीपादु॰, ७ कुण्डिका श्री पादु॰, ८ शक्ति श्रीपादु॰,९ रक्षक (ढाल) श्रीपादु॰, १० हल श्रीपादु॰, ११ घंटा श्रीपादु॰, १२ मधुपात्र श्रीपादु॰ । चक्रस्य 'वहिः' कोणेषु वं वटुक श्रीपादु॰, ईशानं यां योगिनी निर्ऋति । ॐ क्षेत्रपाल श्रीपादु॰ आनेय गणेश श्रीपादु॰, मध्ये—दुर्गा श्रीपादु॰, ईशान्यां विष्णु श्रीपादु॰ अग्नेयां शिव श्रीपादु॰, वायव्यां सूर्य श्रीपादु॰ नैऋत्यां, गं विघ्नाय नमः विघ्न श्रीपादु॰, योगिनी पात्रामृतेन—

पाद्यादिभि सम्पूज्यः एताः नवमावरण देवताः साङ्गाः—सपरिवारः सवाहना, सशक्तिकास्तर्पिता सन्तुः ।

अभोष्ट सिद्धि मे देहि......शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ।
नवमावरण देवताभ्यो नमः, पंच पुष्पांजलिं दद्यात् ।
मुद्रां प्रदर्श्य, ।

देवता की प्रसन्नता को मुद्रा दिखावें हाथों से ।

अक्षमाला, परशु, गदा, इषु, कुलिश, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दंड, शक्ति, असि, चर्म, घंटा, सुराभाजन, त्रिशूल, पाश, सुदर्शन, हल, शंख, मुसल, चक्र, परिघ, भुशुण्ड शिरः ।

तत्व मुद्रा से विषेशार्घ्य देवें ।

मूलं---आत्म तत्व व्यापिका श्री त्रिशक्ति चामुण्डा साङ्गाः सपरिवार सायुधः सशक्तिकः तृप्यन्तु ।

विद्या तत्व व्यापिका श्री० तृप्यन्तु । मूलं शिव तत्व व्यापिका श्री० तृप्यन्तु । सर्व तत्व व्यापिका श्री तृप्यन्तु । यथाशक्ति पूजा पूर्णता को जप करे ।

गं विघ्नाय नमः ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे । ॐ ह्रीं महा कालेश्वराय विच्चे । वटुक मंत्र--ऐं--गुरुवे नमः । कृतेनानेन पूजनेन श्रीगुरु जगदम्बा त्रिशक्ति चामुण्डा प्रसादात् परिपूर्णमस्तु ! फलं दद्यात् ।

* शुभम् *

* अथ श्री नव दुर्गा पूजनम् *

★

१ ॐ भू र्भुवः स्वः शैल पुत्र्यै नमः शैल पुत्री श्रीपादुकां० ।

पाद्यादिभि सम्पूज्य । नव दुर्गाओं का पृथक-२ यंत्र के दाहिने पूजन करें ।

२ ॐ भू र्भुवः स्वः ब्रह्मचारिण्यै नमः ब्रह्मचारिणी श्रीपादुकां ० ।

३ ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्र घंटायै नमः चन्द्रघंटा श्रीपादु० ।

४ ॐ भू र्भुवः स्वः कूष्माण्डायै नमः कूष्माण्ड श्रीपादुकां० ।

५ ॐ भू र्भुवः स्वः स्कन्द मात्रे नमः स्कन्दमाता श्रीपादुकां० ।

६ ॐ भू र्भुवः स्वः कात्यायन्यै नमः कात्यायनी श्रीपादुकां० ।

७ ॐ भू र्भुवः स्वः कालरात्र्यै नमः कालरात्री श्रीपादुकां० ।

८ ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्य्यै नमः, महागौरी श्रीपादुकां० ।

९ ॐ भू र्भुवः स्वः सिद्धिदायै नमः ~~महागौरी~~ सिद्धिदा श्रीपादु०कां ।

प्रार्थना—

ॐ विद्युदाम सम प्रभां मृग पति स्कन्ध स्थितां भीषणम् ।
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ता भिरा सेविताम् ॥
हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखांश्चायं गुणं तर्जनीम् ।
विभ्राणा मनलात्मिका शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥१॥

ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः गं गणपतये नमः वं वटुकाय नमः
गणपति ध्यानम् । ॐ उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निज हस्त पद्मैः ।
पाशांकुशा भय वरान्दधतं गजास्यम् ॥
रक्ताम्बरं सकल दुःख हरं गणेशं ।
ध्यायेत्प्रसन्नमखिला भरणाभिरामम् ॥

वटुक ध्यानम्—

ॐ कर कलित कपालः कुण्डली दण्ड पाणि ।
स्तरण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती ॥
क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतु ।
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

फिर पात्र में बिन्दु त्रिकोण लिख आधार पूजन कर उपला की अग्नि स्थापन करे, अग्नि में प्राण प्रतिष्ठा ज्योति-स्वरूपिणी महामाया की करे ज्योति प्रकट कर पूजन करे।

ॐ भू भुर्वः स्वः आद्यासव सुरौजोद्भव तेज स्वरूप श्री दुं दुर्गायै नमः । (ऐला लवंग घृत मिष्ठान मेवा जायफल चटावै) ।

प्रार्थनाः—प्रधान साधार विकल्प सत्ता ।
स्वभाव भावाद्भुवन त्रयस्य ॥
सा विद्यया व्यक्त मपीह माया ।
ज्योति परा पातु जगन्ति नित्यम् ॥

जलती हुई ज्योति के सामने आरती आदि करके दुर्गा-सप्तशती के सात सौ मुख्य बीजों का पाठ करे, हवन करे व तर्पण करने से भगवती अत्यन्त प्रसन्न होती है।

विशेष आरार्त्तिक्यं कुर्य्यात्।

रं इति प्रज्वाल्य श्रीं ह्लीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्लीं श्रीं. इति गंध पुष्पादिमारात्रिकं 'सम्पूज्य' चक्र मुद्रां प्रदर्श्यास्त्रेण प्रोक्ष्य, घंटा वादन पूर्व कं मूलेन आरार्त्रिक मन्त्रेण वा नीराजयेत्॥

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्य दग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्व ज्योतींषि आर्तिक्यं प्रतिग्रह्यताम्॥

❀ आरती श्री चामुण्डाजी की ❀

जय जय जगदम्बे मैय्या, जय जय जगदम्बे।
जय जय मा चामुण्डा, विश्वेश्वरि अम्बे॥
सत्, चित्, आनन्द-कन्दनि, स्पन्दनि शीला।
आद्या, एक, अनेका, अभिनव चिद् लीला॥ १॥
आल्हादिन्, तू संवित, सेवित सत्य परा। मैय्या सेवित—
वामा, रौद्री, ज्येष्ठा, नित्या, तू अपरा॥ २॥
प्राण, अपान, सुषुम्ना, वाग्मयि वेद मयी। मैय्या वाग्मयि—
इच्छा, ज्ञान, क्रियात्मिक, भेद, अभेद, भयी॥ ३॥
स्वयं प्रकाश, विमर्शा, मधु, ऐश्वर्य्य भरी। मैय्या मधु—
त्रिगुणा त्रिगुणातीता, शान्त, विलास-करी॥ ४॥
जयति स्वराट, विराटिनी, कुण्डलिनी रूपा। मैय्या० —
पंच-कृत्य-रत, योगि-योगिनि, सर्वेश्वरि रूपा॥ ५॥
ब्रह्म, विष्णु, शिव, गणपति, राम कृष्ण तू ही। मैय्या रामकृष्ण
वाणी, कमला, गौरी, जनक सुता तू ही॥ ६॥

तू रस-रास विलासिनी, रासेश्वरि राधा । मैय्या रासेश्वरी
ब्रह्म सहचरी,सेवित हर हरि,जय जग आराधा ।।७।।
चण्डमुण्ड संहारण कारण, चण्डी रूप धरचौ । चण्डी—
शम्भु निशंभु विदारे, महिषा नष्ट करचौ ।। ८ ।।
चरण पराग सुमहदी, भगत अभय कारी । मैय्या भगत –
दिव्यायुध कर कमलन, असुर वृत्ति हारी ।।९।।
वहत पीयुष पयोधर, सिद्धन पय प्यावौ । मैय्या सिद्धन--
ज्ञान विज्ञान, भाव, गुण गौभत्र,अंचल झर लावौ ।।१०।।
मैय्या मैय्या मैय्या मैय्या, कह इतनौ जानू । मैय्या कह
अज्ञानी शिशु भाव, होय,दृढ़, यही ठान ठानू ।।११।।
अम्बे जी की आरति, जो आरत गावै ।
कहत 'वशिष्ठ' पराभक्ति संग, भुक्ति मुक्ति पावै ।।१२।।
बोलो आद्या शक्ति की जय ब्रह्म विद्या की जय ।
महा माया की जय, सर्वेश्वरी की जय ।
जय जय जय चामुण्डे-३ –

विशेष मन्त्र पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

शिवे शिव सुशीतलामृततरङ्ग गंधोल्लसः ।
न्नावावरण देवते नव –नवामृतस्पन्दिनि ।।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले ।
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः ।।१।।
निवारण-संविदुद्गम परास्त भेदोल्लसत् ।
पदास्पदचिदेकता वर शरीरिणी स्वैरिणी ।।
रसायन तरङ्गिणी रुचितरङ्गसंच्चारिणी ।
प्रकाम परिपूरिणी प्रसृत एष पुष्पाञ्जलिः ।।२।।
तरंगयति सम्पदं तदनुसंहरत्या पदं ।

सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः ।।
क्षिणोति दुरितानि यत्प्रणातिरम्ब तस्यै सदा।
शिवङ्करि शिवे परे शिव पुरन्धि तुभ्यं नमः ।।
दिगीश्वर-सुसेविते दिन मणि प्रभा रञ्जिते।
दिनेश शशि कुराड़ले शरद चन्द्र विम्बानने ।।
उपासक प्रपूजिते प्रणत परिजात द्रमे।
प्रणात जनवत्सले तव ददेसु पुष्पाञ्जलि।
जय जय जगदम्ब भक्त वश्ये।
जय जय सान्द्र कृपा वशान्त रङ्गे ।।
जय जय निखिलार्थ दान शौण्डे।
जय जय हे भुवनेशि चित्सुखाब्धे ।।

❀ अथ दुर्गा (चण्डिका) आपदुद्धाराष्टकम् ❀

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहिदुर्गे ।।
नमस्ते जगच्चिन्त्य मान स्वरूपे, नमस्ते महायोगि विज्ञानरूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्द रूपे, नमस्ते जगत्तारणि त्राहि दुर्गे ।।
अनाथस्य दीनस्य दीनस्य तृष्णा तुरस्य, भयार्त्तस्य भीतस्य वृद्धस्य जन्तो।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तार कर्त्री,नमस्ते जगत्तारणि त्राहिदुर्गे ।।
अरण्येरणो दारुणे शत्रुमध्ये, जले संकटे राजगेहे प्रवासे।
त्वमेका गतिर्देवि विस्तार हेतुर्नमस्ते जगत्तारणि त्राहि दुर्गे ।।
अपारे महादुस्तरेत्यन्त घोरे, विपत्सागरे मज्जतां देहभाजां।
त्वमेकागतिर्देवि निस्तार नौका,नमस्ते जगत्तारिणी त्राहिदुर्गे।।
नमश्चण्डिके ! चण्डदोर्दण्डलील समुत्खंडिता खंडला शेषशत्रोः।
त्वमेका गतिर्विघ्न सन्दोहहर्त्री, नमस्ते जगत्तारणि त्राहिदुर्गे ।।

त्वमेका सदाराधिता सत्यवादिन्य नेकाखिला क्रोधना क्रोध-
निष्ठाः ॥
इड़ा-पिंगला त्वं सुषुम्णा च नाडी,नमस्ते जगत्तारणि त्राहिदुर्गे ॥
नमो देवि ! दुर्गे ! शिवे ! भीमनादे,सदासर्व सिद्धि प्रदातृस्वरूपे ।
विभूतिः सतांकाल-रात्रिः स्वरूपे,नमस्ते जगत्तारणि त्राहिदुर्गे ॥
शरणामसि सुराणां सिद्ध विद्यां धराणां, मुनिदनुज वराणां
व्याधिभि पीडितानाम् ।
नृपति गृह गतानां दस्युभिस्त्रासितानां,त्वमसि शरणामम्ब देवि
दुर्गे ! प्रसीदः ॥

क्षमा याचना स्त्रोत्र करने के बाद प्रदक्षिणा करें ।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः,
सद्योऽश्वमेधादि फलं ददाति ॥
तां सर्व पाप क्षय हेतु भूतां,
प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥ १ ॥
रक्तोत्पलाऽऽरक्त प्रभाऽन्विताभ्यां,
ध्वजोर्ध्वरेखा कुलिशाङ्किताभ्याम् ।
अशेष वृन्दारक वन्दिताभ्यां,
नमो भवानी पद पङ्कजाभ्याम् ॥ २ ॥

भदराय नमः

चन्डिका स्त्रोत्र आदि का भी समय हो तो पाठ कर लेवें । यहाँ तक पूजा करके फिर सात सौ वीज सात सो नामों का पाठ करें। इसके बाद मंत्रात्मक सात सौ वीज मंत्र उनके अधिष्टात्रि नाम व असली सात सौ मूल श्लोकी सप्तशती अगले संस्करण में देंगे ।

* शुभम् *